சென்னை பாரதி

चेन्नै भारती

अंक : 24 वर्ष 2018-19

चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक / वि.सं.) की हिन्दी पत्रिका

दिनांक 25 अक्टूबर, 2018 को इमेज में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (बैंक / वि.सं.), चेन्नै. की 65वीं अर्धवार्षिक बैठक में सुश्री पद्मजा चुन्डूरू, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडियन बैंक व अध्यक्ष, नराकास (बैंक व वि. सं.), चेन्नै. सभा को संबोधित करते हुए

चन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व वि.सं.)
की 65वीं बैठक के दौरान इंडियन बैंक की गृह पत्रिका 'इंड छवि' का विमोचन

संयोजक

इंडियन बैंक
Indian Bank
आपका अपना बैंक YOUR OWN BANK

संयोजक : कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

संरक्षक
सुश्री पद्मजा चुन्डूरू
अध्यक्ष, चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व वि.सं.) तथा प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

परामर्शदाता
डॉ. बीरेन्द्र प्रताप सिंह
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

मुख्य संपादक
श्री अजय कुमार
सदस्य सचिव, चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व वि.सं.) एवं मुख्य प्रबंधक, राजभाषा, इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

अंक संपादक
श्री महेशकुमार संजयराव आहेर
सहायक प्रबंधक (राभा) सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया

संपादक
श्री श्याम कुमार दास
सहायक प्रबंधक (राभा)
इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

संपादकीय समिति
श्रीमती गौरी वी एम, मुख्य प्रबंधक(राभा), बैंक ऑफ बड़ौदा, चन्दन कुमार शर्मा, सहायक प्रबंधक (राभा), इंडियन बैंक, सचिन दास, सहायक प्रबंधक (राभा), पंजाब नेशनल बैंक

சென்னை பாரதி
चेन्नै भारती
CHENNAI BHARATI

चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक/वि.सं.) की हिन्दी पत्रिका

अंक : 24 वर्ष 2018-19

अनुक्रमणिका

सदेश

- अध्यक्ष महोदया की कलम से .....
- सदस्य सचिव का संदेश
- अंक संपादक का संदेश

नराकास की बैठक

- चेन्नै नराकास की 64 वीं बैठक
- चेन्नै नराकास की 65 वीं बैठक

लेख

- हिन्दी साहित्य में युगान्तकारी उपन्यासकार - भीष्म साहनी
- सोचिए –खाइए- बचाइए
- तमिलनाडु – विभिन्न प्रकार के संस्कार और उनका अर्थ
- विश्वास की पंचायती
- महिलाओं की बदलती हुई स्थिति
- सुरक्षित व उन्नत साइबर प्रणाली
- ग' क्षेत्र में 'ग' क्षेत्र

काव्य खंड

- किस बात पर तुम कहते हो ?
- प्रभु तेरा ही रूप है सब
- तू हस के जरा देख
- किसका सच
- मन में एक दीप जलाना तुम

चेन्नै नराकास (बैंक व वि. सं.) द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

- संयुक्त हिन्दी कार्यशाला
- संयुक्त हिन्दी सेमिनार
- अंतर-बैंक हिन्दी प्रतियोगिता

समिति के सदस्य बैंकों व संस्थाओं द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह व अन्य गतिविधियाँ

- भारतीय रिज़र्व बैंक
- इंडियन बैंक
- पंजाब नेशनल बैंक
- इण्डियन ओवरसीज़ बैंक (केन्द्रीय कार्यालय)
- इण्डियन ओवरसीज़ बैंक (क्षेत्रीय कार्यालय-1)
- बैंक ऑफ बड़ौदा
- नाबार्ड
- यूको बैंक
- यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया
- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
- सिडबी
- बैंक ऑफ इंडिया
- ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

अध्यक्ष महोदया की कलम से .....

साथियो,

'चेन्नै भारती' के माध्यम से फिर से मैं आप सबके सम्मुख हूँ। बैंकिंग के इस बदलते हुए परिदृश्य में बैंक में प्रयुक्त होने वाली भाषा का महत्व बढ़ गया है। बैंकों के कार्यक्षेत्र में अब व्यापक विस्तार हो गया है, नए ग्राहक, नया वातावरण एवं नई चुनौतियाँ बैंक कर्मियों के समक्ष हैं। भविष्य में ग्राहकों तक अपने बैंकिंग उत्पाद पहुंचाने हेतु संप्रेषण में भाषा का चुनाव महत्वपूर्ण सिद्ध होगा और इसमें सबसे आगे हिन्दी ही होगी। बैंकों के समामेलन हमें नए-नए अवसर प्रदान करेंगे। हमारे कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी और बैंकिंग के लिए प्रचुर अवसर उपलब्ध होंगे।

जो चले वही भाषा है। जिस भाषा में संप्रेषण आसानी से संभव हो, वह अपने आप बढ़ती है। हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है जिसमें ग्रहकों के हृदय को जीतने की अपार शक्ति है। बैंक हो या अन्य वित्तीय संस्थान, जनता की भाषा का उपयोग कारोबार में बहुत सहायक होता है। हिन्दी के व्यापक स्वरूप ने यह सिद्ध कर दिया है कि कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक इस देश को एक सूत्र में पिरोने का सामर्थ्य यदि किसी भाषा में परिपूर्ण है तो वह केवल हमारी राजभाषा हिन्दी में ही है । भारत एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभर चुका है, भारतीय अर्थ व्यवस्था में वस्तुओं की बढ़ती मांग और उपभोक्ताओं की क्रय शक्ति ने विश्व बाजार का ध्यान भारत की ओर आकर्षित किया है, अतः ऐसे समय में हिन्दी विश्व बाजार में एक महत्वपूर्ण व्यापार की भाषा बनकर उभरी है। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि हिन्दी विश्व के कोने-कोने में समझी जाने वाली भाषा है और यह एक ऐसी भाषा है जो वैश्विक स्तर पर कई देशों में पूरे उत्साह के साथ बोली जाती है ।

मुझे हर्ष है कि नराकास की बैठकें एवं अन्य गतिविधियाँ नराकास के समस्त सदस्य बैंकों / वित्तीय संस्थाओं के पूर्ण सहयोग से सौहार्दपूर्ण वातावरण में सफलतापूर्वक आयोजित की जा रही हैं। नराकास के सदस्यों के बीच पारस्परिक सौहार्द की भावना को बढ़ावा देने एवं युवाओं में बैंकिंग संबंधित जागरूकता उत्पन्न करने के उद्देश्य से हमारी नराकास द्वारा कई नायाब कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। हमने इस दौरान गुरु नानक कॉलेज, वेल्लाचेरी, चेन्नै में "साइबर सुरक्षा" पर एक हिन्दी सेमिनार का आयोजन किया था जो कॉलेज के छात्रों के लिए काफी लाभदायक रहा। भाषा और बैंकिंग को जोड़ने का हमारा प्रयास आगे भी रहेगा।

इस पत्रिका में नराकास की विभिन्न गतिविधियों एवं इसके सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित गतिविधियों को स्थान दिया गया है। मेरा विश्वास है कि हम सब के एकजुट प्रयासों से यह समिति अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सफल होगी।

शुभकामनाओं सहित ....

पद्मजा चुन्डूरू

पद्मजा चुन्डूरू

अध्यक्ष, चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक/वि.सं)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडियन बैंक

सदस्य सचिव का संदेश

साथियो,

बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पत्रिका "चेन्नै भारती" का नवीनतम अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। इस पत्रिका को हमेशा से ही आप सबका प्रेम और सम्मान प्राप्त हुआ है। भाषा के प्रचार-प्रसार में पत्र-पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है। पत्र-पत्रिकाएं एक ओर जहाँ विचारों को जन-मानस तक पहुंचाने का एक महत्वपूर्ण साधन रही है, वहीं दूसरी ओर यह लोगों को रचनात्मक लेखन के लिए भी प्रोत्साहित करती है।

किसी विद्वान ने सच ही कहा है कि "भाषा एक कल्पवृक्ष है, उससे जो भी मांगोगे, वह देती है।" अगर हम कल्पवृक्ष के नीचे बैठें एवं कुछ नहीं मांगे, तो कल्पवृक्ष भी हमें कुछ नहीं देगा। हिन्दी भाषा में वे सब गुण निहित हैं, जिससे इसे कार्यालयीन भाषा के रूप में आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है। बस प्रयास की जरूरत है। इस भाषा में इतनी शक्ति एवं स्वीकार्यता है कि यह नित उन्नति के पथ पर अग्रसर होती जा रही है।

हिन्दी भाषा के सफल कार्यान्वयन हेतु यह आवश्यक है कि कर्मचारियों को हिन्दी में आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, इस दिशा में चेन्नै नराकास (बैंक व वि.सं.) द्वारा सभी प्रयास किए जा रहे है जिसे सभी सदस्यों के सहयोग से आगे भी निरंतर जारी रखा जाएगा। हमें इस बात पर भी ध्यान केंद्रित करना है कि काम-काज में जटिल हिन्दी शब्दों के स्थान पर सरल हिन्दी शब्दों का प्रयोग करें।

इस पत्रिका में अंतर्निहित लेख एवं रचनाओं में अनेक विषयों की जानकारी सरल भाषा में प्रदान करने का प्रयास किया गया है। आइए, राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में हम सब एकजुट होकर, टीम भावना के साथ आगे बढ़ें एवं अपने कार्यालयीन कार्यों में सरल हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। मैं सभी सदस्य कार्यालयों से अपील करता हूँ कि इस पत्रिका के लिए लेख, कविताएँ, संस्मरण इत्यादि भेजते रहें।

शुभकामनाओं सहित ....

अजय कुमार
सदस्य सचिव, चेन्नै नराकास (बैंक व वि.सं.)
मुख्य प्रबंधक (राभा), इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय

अंक संपादक का संदेश

सम्माननीय पाठकगण,

सभी स्नेही पाठकों को हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकानाएं!

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक एवं वित्तीय संस्थाएं), चेन्नै की वार्षिक पत्रिका " चेन्नै भारती" का 24 वां अंक आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हमारे लिए यह गर्व की बात है कि आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी सीखने और जानने वालों की संख्या में निरंतर गुणात्मक वृद्धि हो रही है। क्षेत्रीय भाषाएं एवं हिन्दी भाषा के माध्यम से ग्राहक एवं बैंकिंग को जोड़ने वाला संपर्क सेतु निर्माण करने में नराकास (बैंक) का मार्गदर्शन अत्यत प्रशंसनीय रहा है।

"चेन्नै भारती" के इस अंक में सदस्य कार्यालयों के वरिष्ठ सदस्यों के अनुभवों के साथ-साथ नवोदित सदस्यों की रचनाओं को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं स्टाफ सदस्यों में राजभाषा हिन्दी के उपयोग हेतु प्रोत्साहित करने हेतु सदस्य कार्यालयों द्वारा नराकास के तत्वावधान में विविध अंतरबैंक हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक तिमाही में नराकास द्वारा आयोजित उप समिति की बैठकों हिन्दी के प्रचार-प्रसार तथा उचित कार्यान्वयन हेतु कार्यक्रमों आयोजन संबंधी एवं वर्तमान स्थिती के संदर्भ में विचार-विमर्श कर क्षेत्र में हिन्दी के कार्यान्वयन में प्रगति हेतु उपाय योजनाओं पर चर्चा की जाती है जिससे समिति के मध्य हिन्दी में कार्य करने हेतु एवं हिन्दी के कार्यान्वयन हेतु उत्साहपूर्ण वातावरण निर्माण होता है। सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं के माध्यम से स्टाफ सदस्यों में हिन्दी में कार्य करने के प्रति इच्छा एवं उत्साह पैदा कर सकते है, जो आने वाले वक्त में हिन्दी भाषा के कार्यान्वयन में लाभकारी सिद्ध होगा।

"चेन्नै भारती" पत्रिका सदस्य द्वारा राजभाषा के कार्यान्वयन हेतु किए गए कार्यों एवं स्तुत्य प्रयासों का एक मूर्तिमंत उदाहरण है। पत्रिका कें 24 वें अंक में नराकास (बैंक) के सदस्य कार्यालयों द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़ा , माह एवं हिन्दी दिवस समारोह के सचित्र विवरण और अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियों के समाचार भी प्रकाशित किये गए हैं। आशा है अपनी साज-सज्जा एवं बहुयामी सामग्री के साथ यह अंक आपको पसंद आयेगा। पत्रिका को विशेष पहचान दिलाने एवं अपने वर्ग में शिखर पर ले जाने में आपका मूल्यवान मार्गदर्शन एवं सहयोग अपेक्षित है। इस अंक से सम्बंधित आपकी प्रतिक्रिया एवं बहुमूल्य सुझावों का हमें इन्तजार रहेगा।

आप सबको एक बार पुनः हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

" मन की भाषा, प्रेम की भाषा,
हिन्दी है भारत जन की भाषा"

महेशकुमार संजयराव आहेर
सहायक प्रबंधक (राभा)
सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

हिन्दी साहित्य के युगान्तकारी उपन्यासकार - भीष्म साहनी

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त, 1915, रावलपिण्डी, पकिस्तान और मृत्यु- 11 जुलाई, 2003, दिल्ली में हुआ। 1937 में लाहौर गवर्नमेंन्ट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम ए करने के बाद साहनी ने 1958 में पंजाब विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि हासिल की। भारत पाकिस्तान विभाजन के पूर्व अवैतनिक शिक्षक होने के साथ-साथ ये व्यापार भी करते थे। विभाजन के बाद उन्होंने भारत आकर समाचारपत्रों में लिखने का काम किया। बाद में भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा) से जा मिले। इसके पश्चात अंबाला और अमृतसर में भी अध्यापक रहने के बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में साहित्य के प्रोफेसर बने। 1957 से 1963 तक मास्को में विदेशी भाषा प्रकाशन गृह (फॉरेन लॅग्वेजेस पब्लिकेशन हाउस) में अनुवादक के काम में कार्यरत रहे। यहां उन्होंने करीब दो दर्जन रूसी किताबें जैसे टालस्टॉय आस्ट्रोवस्की इत्यादि लेखकों की किताबों का हिंदी में रूपांतर किया। 1965 से 1967 तक दो सालों में उन्होंने नयी कहानियां नामक पात्रिका का सम्पादन किया। वे प्रगतिशील लेखक संघ और अफ्रो-एशियायी लेखक संघ (एफ्रो एशियन राइटर्स असोसिएशन) से भी जुड़े रहे। 1993 से 1997 तक वे साहित्य अकादमी की कार्यकारी समीति के सदस्य रहे।

उन्हें हिन्दी साहित्य में प्रेमचंद की परंपरा का अग्रणी लेखक माना जाता है। वे आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से एक थे। भीष्म साहनी मानवीय मूल्यों के सदैव हिमायती रहे। वामपंथी विचारधारा से जुड़े होने के साथ-साथ वे मानवीय मूल्यों को कभी आंखों से ओझल नहीं करते थे। आपाधापी और उठापटक के युग में भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बिल्कुल अलग था। उन्हें उनके लेखन के लिए तो स्मरण किया ही जाता है, लेकिन अपनी सहृदयता के लिए भी वे चिरस्मरणीय हैं। भीष्म साहनी ने कई प्रसिद्ध रचनाएँ की थीं, जिनमें से उनके उपन्यास 'तमस' पर वर्ष 1986 में एक फ़िल्म का निर्माण भी किया गया था। उन्हें कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए थे। 1998 में भारत सरकार के 'पद्म भूषण' अलंकरण से भी वे विभूषित किये गए थे।

हिन्दी लेखन में समाजोन्मुखता की लहर बहुत पहले नवजागरण काल से ही उठने लगी थी। मार्क्सवाद ने उसमें केवल एक और आयाम जोड़ा था। इसी मार्क्सवादी चिन्तन को

मानवतावादी दृष्टिकोण से जोड़कर उसे जन - जन तक पहुंचाने वालों में एक नाम भीष्म साहनी जी का है। स्वातन्त्र्योत्तर लेखकों की भाँति 'भीष्म साहनी' सहज मानवीय अनुभूतियों और तत्कालीन जीवन के अन्तर्द्वन्द्व को लेकर सामने आए और उसे रचना का विषय बनाया। जनवादी चेतना के लेखक भीष्म जी की लेखकीय संवेदना का आधार जनता की पीड़ा है। जनसामान्य के प्रति समर्पित साहनी जी का लेखन यथार्थ की ठोस जमीन पर अवलम्बित है।

भीष्म जी एक ऐसे साहित्यकार थे जो बात को मात्र कह देना ही नहीं बल्कि बात की सच्चाई और गहराई को नाप लेना भी उतना ही उचित समझते थे। वे अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक विषमता व संघर्ष के बन्धनों को तोड़कर आगे बढ़ने का आहवान करते थे। उनके साहित्य में सर्वत्र मानवीय करूणा, मानवीय मूल्य व नैतिकता विद्यमान है।

उनका जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिण्डी में एक सीधे-सादे मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। वह अपने पिता श्री हरबंस लाल साहनी तथा माता श्रीमती लक्ष्मी देवी की सांतवी संतान थे। 1935 में लाहौर के गवर्नमेंट कालेज से अंग्रेजी विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उन्होने डॉ इन्द्रनाथ मदान के निर्देशन में 'Concept of the hero in the novel' शीर्षक के अन्तर्गत अपना शोधकार्य सम्पन्न किया। सन् 1944 में उनका विवाह शीला जी के साथ हुआ। उनकी पहली कहानी 'अबला' इण्टर कालेज की पत्रिका 'रावी' में तथा दूसरी कहानी 'नीली ऑंखें' अमृतराय के सम्पादकत्व में 'हंस' में छपी। साहनी जी के 'झरोखे', 'कड़ियाँ', 'तमस', 'बसन्ती', 'मय्यादास की माड़ी', 'कुंतो', 'नीलू नीलिमा नीलोफर' नामक उपन्यासों के अतिरिक्त भाग्यरेखा, पटरियाँ, पहला पाठ, भटकती राख, वाड़गचू, शोभायात्रा, निशाचर, पाली, प्रतिनिधि कहानियाँ व

मेरी प्रिय कहानियाँ नामक दस कहानी संग्रहों का सृजन किया। नाटकों के क्षेत्र में भी उन्होने हानूश, कबिरा खड़ा बाजार में, माधवी मुआवजे जैसे प्रसिद्धि प्राप्त नाटक लिखे। जीवनी साहित्य के अन्तर्गत उन्होंने मेरे भाई बलराज, अपनी बात, मेरे साक्षात्कार तथा बाल साहित्य के अन्तर्गत 'वापसी' 'गुलेल का खेल' का सृजन कर साहित्य की हर विधा पर अपनी कलम अजमायी। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पहले उन्होंने 'आज के अतीत' नामक आत्मकथा का प्रकाशन करवाया। 11 जुलाई सन् 2003 को इनका शरीर पंचतत्व में विलीन हो गया।

स्वतंत्र व्यक्तित्व वाले भीष्म जी गहन मानवीय संवेदना के सशक्त हस्ताक्षर थे। जिन्होंने भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यथार्थ का स्पष्ट चित्र अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया। उनकी यथार्थवादी दृष्टि उनके प्रगतिशील व मार्क्सवादी विचारों का प्रतिफल थी। भीष्म जी की सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने जिस जीवन को जिया, जिन संघर्षो को झेला, उसी का यथावत् चित्र अपनी रचनाओं में अंकित किया। इसी कारण उनके लिए रचना कर्म और जीवन धर्म में अभेद था। वह लेखन की सच्चाई को अपनी सच्चाई मानते थे।

कथाकार के रूप में भीष्म जी पर यशपाल और प्रेमचन्द की गहरी छाप है। उनकी कहानियों में अन्तर्विरोधों व जीवन के द्वन्द्वों, विसंगतियों से जकड़े मध्यवर्ग के साथ ही निम्नवर्ग की जिजीविषा और संघर्षशीलता को उद्घाटित किया गया है। जनवादी कथा आन्दोलन के दौरान भीष्म साहनी ने सामान्य जन की आशा, आकांक्षा, दु:ख, पीड़ा, अभाव, संघर्ष तथा विडम्बनाओं को अपने उपन्यासों से ओझल नहीं होने दिया। नई कहानी में भीष्म जी ने कथा साहित्य की जड़ता को तोड़कर उसे ठोस सामाजिक आधार दिया। एक भोक्ता की हैसियत से भीष्म जी ने विभाजन के दुर्भाग्यपूर्ण खूनी इतिहास को भोगा है। जिसकी अभिव्यक्ति 'तमस' में हम बराबर देखते है। जहाँ तक नारी मुक्ति समस्या का प्रश्न है, भीष्म जी ने अपनी रचनाओं में नारी के व्यक्तित्व विकास, स्वातन्त्र्य, एकाधिकार, आर्थिक स्वातन्त्रता, स्त्री शिक्षा तथा सामाजिक उत्तरदायित्व आदि उसकी 'सम्मानजनक स्थिति' का समर्थन किया है। एक तरह से देखा जाए तो साहनी जी प्रेमचन्द के पदचिन्हों पर चलते हुए उनसे भी कहीं आगे निकल गए हैं। भीष्म जी की रचनाओं में सामाजिक अन्तर्विरोध पूरी तरह उभरकर आया है। राजनैतिक मतवाद अथवा दलीयता के आरोप से दूर भीष्म साहनी ने भारतीय राजनीति में निरन्तर बढ़ते भ्रष्टाचार, नेताओं की पाखण्डी प्रवृत्ति, चुनावों की भ्रष्ट प्रणाली, राजनीति में धार्मिक भावना, साम्प्रदायिकता, जातिवाद का दुरूपयोग, भाई-भतीजावाद, नैतिक मूल्यों का ह्रास, व्यापक स्तर पर आचरण भ्रष्टता, शोषण की षडयन्त्रकारी प्रवृत्तियां व राजनैतिक आदर्शों के खोखलेपन आदि का चित्रण बड़ी प्रामाणिकता व तटस्थता के साथ किया। उनका सामाजिक बोध व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित था। उनके उपन्यासों में शोषणहीन, समतामूलक प्रगतिशील समाज की रचना, पारिवारिक स्तर, रूढ़ियों का विरोध तथा संयुक्त परिवार के पारस्परिक विघटन की स्थितियों के प्रति असन्तोष व्यक्त हुआ। भीष्म जी का सांस्कृतिक दृष्टिकोण नितान्त वैज्ञानिक और व्यवहारिक है, जो निरन्तर परिष्करण परिशोधन, व परिवर्धन की प्रक्रिया से गुजरता है। प्रगतिशील दृष्टि के कारण वह मूल्यों पर आधारित ऐसी धर्मभावना के पक्षधर हैं जो मानव मात्र के कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध और उपादेय है।

उनके साहित्य में जहाँ एक ओर सहृदयता व सहानुभूति है। वही दूसरी ओर जातीय तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान की आग भी है। वे पूँजीवादी आधुनिकताबोध और यथार्थवादी विचार धारा के अन्तर्विरोधों को खोलते चलते हैं। निम्न मध्यवर्ग के समर्थ रचनाकार भीष्म जी भारतीय समाज के आधुनिकीकरण के फलस्वरूप विश्व साम्राज्यवाद और देशी पूँजीवाद में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हैं। वे मध्ययुगीन सामन्ती व्यवस्था से समझौता करके पूँजीवाद के द्वारा अपनी बुर्जुआ संस्कृति से लोकप्रिय हुई निम्नकोटि कें बुर्जुआ संस्कारों को चित्रित कर प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाते दिखते हैं। वे एक ओर आधुनिकताबोध की विसंगतियों और अजनबीपन के विरूद्ध लड़ते हैं तो दूसरी ओर रूढ़ियों अंधविश्वासों वाली धार्मिक कुरीतियों पर प्रहार करते हैं।

यदि स्त्री पुरूष सम्बन्ध की बात की जाए तो भीष्म जी भारतीय गृहस्थ जीवन में स्त्री पुरूष के जीवन को रथ के दो पहियों के रूप में स्वीकार करते हैं। विकास और सुखी जीवन के लिए दोनों के बीच आदर्श संतुलन और सामंजस्य का बना रहना अनिवार्य है। उनकी रचनाओं में सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने वाले आदर्श दम्पत्तियों को बड़ी गरिमा के साथ रेखांकित किया गया है। उनका विश्वास है कि स्त्रियों के लिए समुचित शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता व व्यक्तित्व विकास की सुविधा आदर्श समाज की रचना के लिए नितान्त आवश्यक है। वह स्त्रियों के व्यक्तित्व

विकास के पक्षपाती थे। जो अवसर पाकर अपना चरम विकास कर सकती है। भीष्म जी परम्परा से चली आ रही विवाह की जड़ परम्परा को स्वीकार न करके भावनात्मक एकता और रागात्मक अनुबंधो को विवाह का प्रमुख आधार मानते थे।

मानवीय मूल्यों पर आधारित उनकी धर्म भावना इंसान को इंसान से जोड़ती है न कि उन्हें पृथक करती है। उनके उपन्यासों में शोषणविहीन समतामूलक प्रगतिशील समाज की स्थापना के साथ समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों के त्रासद परिणाम, धर्म की विद्रूपता व खोखलेपन को उद्धघाटित किया गया है।

मार्क्सवाद से प्रभावित होने के कारण भीष्म जी समाज में व्याप्त आर्थिक विसंगतियों के त्रासद परिणामों को बड़ी गंभीरता से अनुभव करते थे। पूँजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत वह जन सामान्य के बहुआयामी शोषण को सामाजिक विकास में सर्वाधिक बाधक और अमानवीय मानते थे। बसन्ती, झरोखे, तमस, मय्यादास की माड़ी व कड़ियाँ उपन्यासों में उन्होंने आर्थिक विषमता और उसके दु:खद परिणामों को बड़ी मार्मिकता से उद्धघाटित किया जो समाज के स्वार्थी कुचक्र का परिणाम है और इन दु:खद स्थितियों के लिए दोषपूर्ण समाज व्यवस्था उत्तरदायी है। एक शिल्पी के रूप में भी वह सिद्धहस्त कलाकार थे। कथ्य और वस्तु के प्रति यदि उनमें सजगता और तत्परता का भाव था तो शिल्प सौष्ठव के प्रति भी वह निरन्तर सावधान रहते थे।

भीष्म जी प्रेमचन्द के समान जीवन की विसंगतियों और विडम्बनाओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं भले ही वह प्रेमचन्द की भाँति ग्रामीण वस्तु को नहीं पकड़ पाये किन्तु परिवेश की समग्रता में वस्तु और पात्र के अन्त: सम्बन्धों को जिस प्रकार खोलते हैं और इन सम्बन्धों में जनता के मुक्तकामी संघर्षों को रूपायित करते हैं वह निश्चित रूप से उन्हें न केवल प्रेमचन्द के निकट पहुंचाता है अपितु उसमें नया भीष्म भी जुड़ जाता है। अपनी रचनाओं में उन्होंने जहाँ जीवन के कटुतम यथार्थों का प्रामाणिक चित्रण किया है वहीं जनसामान्य का मंगलविधान करने वाले लोकोपकारक आदर्शों को भी रेखांकित किया है। अपनी इन्हीं कालजयी रचनाओं के कारण वह हिन्दी साहित्य में युगान्तकारी उपन्यासकार के रूप में चिरस्मरणीय रहेंगे।

बी.राजेन्द्र कुमार
समप्र (हिन्दी), सिडबी.चेन्नै

रानी और कानी

माँ उसको कहती है रानी
आदर से, जैसा है नाम;
लेकिन उसका उल्टा रूप,
चेचक के दाग, काली, नक-चिप्टी,
गंजा-सर, एक आँख कानी।

रानी अब हो गई सयानी,
बीनती है, काँड़ती है, कूटती है, पीसती है,
डलियों के सीले अपने रूखे हाथों मीसती है,
घर बुहारती है, करकट फेंकती है,
और घड़ों भरती है पानी;
फिर भी माँ का दिल बैठा रहा,
एक चोर घर में पैठा रहा,
सोचती रहती है दिन-रात
कानी की शादी की बात,
मन मसोसकर वह रहती है
जब पड़ोस की कोई कहती है-
"औरत की जात रानी,
ब्याह भला कैसे हो
कानी जो है वह!"

सुनकर कानी का दिल हिल गया,
काँपे कुल अंग,
दाईं आँख से
आँसू भी बह चले माँ के दुख से,
लेकिन वह बाईं आँख कानी
ज्यों-की-त्यों रह गई रखती निगरानी।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

किस बात पर तुम कहते हो ?

चंद अल्फ़ाज़ मेंरे दिल की।
और ये भीड़ इस महफ़िल की॥
इन सब को भूल पाना,
मेंरे लिए आसान नहीं।
किस बात पर तुम कहते हो,
मेरा देश महान नहीं ?

यहाँ पे बसते चार-चार भाई
हिंदू- मुस्लिम और सिख-ईसाई॥
खाकर रोटी आधी भी,
करता नहीं कोई इसकी बुराई॥
बाईबिल, गीता और गुरुग्रंथ, यहाँ
पढ़ते लोग सिर्फ़ क़ुरान नहीं॥
किस बात पर तुम कहते हो,
मेरा देश महान नहीं ?

न्योछावर करती बहनें अपना भाई,
और हर बीवी पोंछ डालती है सिंदूर।
जिसकी रक्षा के लिए माँयें,
भेज देती बेटे को अपनी आँखों से दूर॥
जब-जब पड़ी ज़रूरत इसको,
मन-से, धन-से की सेवा हमने,
किया कुर्बान सिर्फ़ अपनी जान नहीं॥
किस बात पर तुम कहते हो,
मेरा देश महान नहीं ?

दुनियाँ के इस अस्त्र-शस्त्र की होड़ में।
पीछे रहे नहीं हम किसी दौड़ में॥
किसकी मज़ाल जो देखे हमें नज़रें उठाकर।
पलभर में दिखा देंगे उसे मिट्टी में मिलाकर॥
हम हैं आज के आज़ाद भारत,
सन- 45 वाला जापान नहीं॥
किस बात पर तुम कहते हो,
मेरा देश महान नहीं ?

अमर हुए शहीदों सुन लो,
हम तेरे नक्श-ए-कदम पे जायेंगे।
मर जायेंगे, मिट जायेंगे,पर
हर हाल में ये वचन निभायेंगे॥
जिन मुश्किलों में दिया है साथ तुमने,
जाएगा कभी बेकार वो बलिदान नहीं ॥
किस बात पर तुम कहते हो,
मेरा देश महान नहीं ?

ललित कुमार
प्रबन्धक- अग्नि सुरक्षा
पंजाब नैशनल बैंक
अंचल कार्यालय, चेन्नै

सोचिए 'खाइए- बचाइए

क्या आप बहुत सा खाना बिना खाए ही प्लेट में छोड़ देते हैं? क्या प्लेट में जूठन छोड़ना आपकी आदत है? क्या आप चाय/कॉफी पूरी पिए बिना ही छोड़ देते हैं? यदि ऐसा है तो एक बार फिर सोचिए कि आप जो खाना बिना खाए हुए छोड़ रहे हैं उसकी असली कीमत आपको मालूम है? क्या आप जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्र संघ(एफएओ) के अनुसार प्रतिवर्ष विश्व में 1.3 बिलियन टन खाना बर्बाद किया जाता है?

आपका खाना सिर्फ आपका नहीं है

याद रखिए कि जो खाना आप बिना खाए ही जूठा छोड़ रहे हैं वह सिर्फ आपका ही नहीं है। भले ही आपने उसे पैसे देकर खरीदा हो। जो खाना खेत से आपकी प्लेट तक पहुंचा है उसे वहां तक पहुंचने में बहुत सारे संसाधनों का इस्तेमाल हुआ है। प्रकृति और मानव के अनेक उपयोगी तत्व उसमें लगें हैं और तब कहीं जाकर वह आप तक पहुंचा है। जैसे पानी, खाद, धूप, हवा, ईंधन, और बिजली आदि।

खाना और कचरा

हमारे देश में हर घर में हर रोज काफी मात्रा में बचा हुआ खाना कचरे के डिब्बों में पहुंचता है। गांवों में पालतू जानवर जैसे गाय-भैंस या फिर कुत्ते होते हैं। बचा हुआ खाना उन्हें खिला दिया जाता है और इस प्रकार बचे हुए खाने की समस्या का समाधान अपने आप ही हो जाता है। लेकिन शहरों में कचरे के डिब्बे के अलावा बचे हुए खाने के लिए कोई स्थान नहीं है। कूड़ेदान में पहुंच कर यह दूसरे सूखे कचरों जैसे कागज, पॉलीथीन आदि के साथ मिल कर उसे भी अनुपयोगी बना देता है। सड़ जाने के बाद इसमें से बदबू वाली गैस निकलती है। जानवर और पक्षी खाने के लिए इसे इधर–उधर फैला देते हैं जिससे बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ जाता है। कचरे में से कागज, पॉलीथीन आदि बीनने वाले के लिए भी यह समस्या पैदा करता है। इससे ये रिसाइक्लिंग के लिए भी नहीं जा पाते।

बर्बादी कितनी

एक छोटे से परिवार की दृष्टि से देखा जाए तो थोड़ा बहुत खाना बच भी जाता है तो इसमें क्या हर्ज है? लेकिन एक बार फिर से सोचिए। ऐसे ही थोड़ा-थोड़ा करके हर घर में खाना बचता है। हर घर से कूड़े दान में फेंके जाने वाले बचे हुए खाने की मात्रा कितनी अधिक हो जाती है। किसी भी कूड़ेदान में झांक कर देखिए उसमें सबसे ज्यादा मात्रा बचे हुए खाने की ही नजर आएगी। वह भी उस स्थिति में जब भारत जैसे देश में लाखों लोगों को दो वक्त का भोजन भी ठीक से नसीब नहीं होता। कितने ही बच्चे कुपोषण का शिकार होकर असमय ही मृत्यु का ग्रास बन जाते हैं या फिर उम्र भर कमजोर और बीमारी का जीवन जीने को मजबूर होते हैं। इस प्रकार की बर्बादी आपराधिक लापरवाही नहीं तो और क्या है?

इसके अलावा शादियों और पार्टियों में बचने वाले खाने के बारे में कौन नहीं जानता। विवाह और उत्सव के उत्साह में उस तरफ बिल्कुल ध्यान ही नहीं दिया जाता। नतीजन हजारों टन अच्छी क्वालिटी का अत्यधिक पौष्टिक खाना प्रतिवर्ष बर्बाद हो जाता है। इस व्यर्थ खाने से करोड़ों लोगों को एक समय का भोजन प्रदान किया जा सकता है।

क्या करें

इस प्रकार की बर्बादी को तो बिल्कुल ही टाला जा सकता है। सरकार भी अब इस दिशा में गंभीरता से विचार कर रही है। शीघ्र ही इस दिशा में कोई कानून बनाया जाना चाहिए। भोजन की बर्बादी के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए सरकार स्कूल स्तर पर ही स्कीमों को लागू करने की योजना बना रही है। भारत अत्यधिक भोजन बर्बाद करने वाले देशों में से एक है।

दूसरी तरफ फूड एंड एग्रीकल्चरल आर्गेनाइजेशन का कहना कि विश्व में जितना खाना प्रतिवर्ष बर्बाद किया जाता है वह प्राकृतिक संसाधनों पर बिना कोई अतिरिक्त दबाव डाले 500 मिलियन लोगों को खाना उपलब्ध करवाने के लिए पर्याप्त है।

जर्मनी जैसे दुनिया के कई देशों में होटलों में खाना बचा कर छोड़ना अपराध माना जाता है और उसके लिए जुर्माना भी लगाया जाता है। कई देशों में बचे हुए खाने की समस्या से निपटने के लिए गंभीरता से विचार किया जा रहा है। जर्मनी में एक वेबसाइट की शुरूआत की गई है जो कि बचे हुए खाने को

शेयर करने की सुविधा उपलब्ध करवाती है। दुबई के एक होटल के मालिक ने खाना आर्डर करके उसे पूरा न खाने वालों पर जुर्माना लगाने का फैसला किया है। फ्रांस की सरकार ने भी खाने की बर्बादी को रोकने की दिशा में अनेक कदम उठाए हैं।

हमारी जिम्मेदारी

सरकार जब तक कोई कानून या नियम बनाती है तब तक हम इंतजार न करें। बेहतर होगा कि हम पहले ही इस बारे में सचेत हो जाएं। अब आप सोचेंगे कि हम भला इसमें क्या कर सकते हैं। यदि हर व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर थोड़ा सा प्रयास करें तो इस अक्षम्य बर्बादी को हम आसानी से कम कर सकते हैं। बस इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखिए।

1. अन्नं ब्रह्मा यताः। हमारे शास्त्रों में भोजन को बहुत ही पवित्र माना गया है। अतः आज से ही प्रण लें कि खाने की बर्बादी को रोकने के लिए आप हर संभव प्रयास करेंगे।

2. किसी शादी या पार्टी में जाने के लिए आपको यदि निमंत्रण मिलता है तो आप अपने होस्ट को जरूर बताएं कि आप आ रहे हैं या नहीं। यदि आपको सपरिवार बुलाया गया है तो उन्हें जरूर बताएं कि कितने सदस्य आ रहे हैं। आरएसवीपी(RSVP) के बारे में गंभीरता से सोचे जाने की आवश्यकता है।

3. यदि आप किसी को घर पर खाने के लिए बुला रहे हैं तो उनकी विशेष पसंद या नापसंद पूछने में संकोच न करें। सोचिए आपने बड़ी ही मेंहनत से गाजर का ढेर सारा हलवा बनाया है और आपके मेहमान डायबिटीज से पीड़ित हैं।

4. हमेशा परिवार के लोगों की रुचि, स्वाद और उनकी सेहत को ध्यान में रखकर ही खाना बनाएं। हमेशा कोशिश यही होनी चाहिए कि भले ही खाना कम पड़ जाए लेकिन बचना नहीं चाहिए। खाना कम पड़ जाने की स्थिति से निपटने के बहुत से उपाय हमारे पास उपलब्ध हैं लेकिन अधिक बचे हुए खाने को कचरे के डिब्बे में फेंकने के अलावा कोई चारा नजर नहीं आता।

5. शादी या पार्टी में कई बार लोग एक बार में ही अपनी पूरी प्लेट भर लेते हैं। फिर उसका स्वाद ठीक नहीं, अधिक मसाला या मिर्ची होने का हवाला देकर प्लेट को टेबल के नीचे सरका देते हैं। यदि आपको किसी खाने के बारे में कोई शंका है तो सर्व करने वाले से पूछ सकते हैं या फिर चखने के लिए पहले थोड़ा ही खाना प्लेट में डालें या फिर वही खाना खा रहे अपने किसी दोस्त से उसके बारे में पूछ लें।

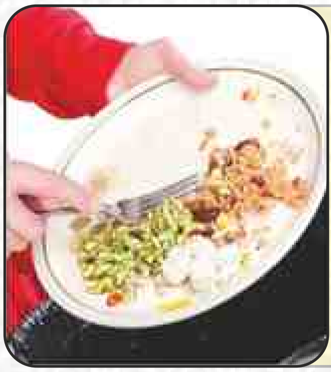

अन्न है जीवन का आधार, मत करो इसे यूँ बेकार !

6. आज कितनी भी सावधानी क्यों न बरती जाए फिर भी हर पार्टी या शादी में ढेर सारा खाना बच ही जाता है। इसलिए जब भी कभी आप किसी शादी या पार्टी का आयोजन करते हैं तो अपने शहर में किसी अनाथ आश्रम या एनजीओ से पहले ही संपर्क करके रखें ताकि खाना बच जाने की स्थिति में आप उनसे संपर्क कर सकें और खाने की बर्बादी को रोका जा सके। वेद व्यास ने कहा है "अन्नदानं समं दानं त्रिलोकेशु न विद्यते अर्थात भूखे लोगों को अन्न दान करने से बड़ा कोई दान तीनों लोकों में नहीं है।" मनुस्मृति में भी कहा गया है "जल का दान करने वाला पूर्ण संतुष्टि प्राप्त करता है और अन्न का दान करने वाला अक्षय सुख की प्राप्ति करता है।" अनेक शहरों में कई एनजीओ काम करती हैं जो कि बचा हुआ खाना जरूरतमंदों में बांट देती हैं।

7. याद रखिए कि हर धर्म में भोजन और अन्न की बर्बादी को गलत माना गया है।

8. यदि आपके पास किचन गार्डन की सुविधा है तो बचे हुए खाने को कूड़े दान में फेंकने की बजाय उसका कम्पोस्ट बनाने की विधि सीखें जो कि बहुत ही आसान होती है।

9. खाने की बर्बादी रोक कर एक तरफ जहां कचरे की मात्रा में कमी करते हैं वहीं दूसरी और कचरे को उठा कर ले

जाने में लगने वाले संसाधनों में भी कमी करते हैं।

10. जब भी आप कहीं होटल/रेस्तरां में बाहर खाने के लिए जाएं तो सोच-समझ कर ही आर्डर करें और इस बात का पूरा ख्याल रखें कि खाना जूठा न छोड़ा जाए।

11. सेल्फ सर्विस का सही मतलब जानिए। यानी कि आपके पेट और आपकी भूख को आपसे बेहतर कौन समझ सकता है। इसलिए जो भी कुछ खाने के लिए प्लेट में रखें सोच समझ कर ही रखें।

12. कई बार ऐसा हो सकता है कि आपको खाना बिना खाए छोड़ना ही पड़े पर आपकी कोशिश यही होनी चाहिए कि जूठन छोड़ना आपकी आदत नहीं बननी चाहिए।

13. लगातार बढ़ रही जनसंख्या के लिए भोजन उपलब्ध करवाने के लिए अन्न का उत्पादन बढ़ाना तो आवश्यक है ही उसकी बर्बादी को रोकना भी जरूरी है। आप प्रत्यक्ष रूप से अन्न का उत्पादन बढ़ाने में तो कोई योगदान नहीं कर सकते लेकिन भोजन की बर्बादी को कम करके आप भुखमरी से निपटने में भी अपना योगदान दे सकते हैं।

14. भोजन को उचित आदर सम्मान दें जिसका वह हकदार है। मनुस्मृति में कहा गया है "अन्न का सदैव का सम्मान करें।"

15. कार्बन फुट प्रिंट कम करने की तरह ही अपना फूड प्रिंट कम करने की दिशा में प्रयास करें।

16. खाना बचाने, उसे व्यर्थ न गंवाने के बारे में अपने दोस्तों, रिश्तेदारों में जागरूकता फैलाएं।

देश में अन्न की कमी की समस्या कतई नहीं है। समस्या है तो उसकी बर्बादी को रोकना। आइए हम सब भी इस प्रयास में अपना सार्थक योगदान दें। विश्व पर्यावरण दिवस 2013 की थीम - थिंक-ईट-सेव अर्थात सोचिए, खाइए और बचाइए को अपने जीवन में उतारें।

श्याम सुंदर
प्रबंधक(राजभाषा)
भारतीय रिज़र्व बैंक, चेन्नै

"प्रभु तेरा ही रूप है सब"

प्रभु तेरा ही रूप है सब
तेरी ही सब है माया
अपना नहीं है कुछ भी
कुछ भी नहीं पराया
प्रभु ....

मुमकिन नहीं है कुछ भी
गर रजा न हो तेरी
दिखता है जो जगत में
तेरी ही सब है छाया
प्रभु ....

दिल ढूंढता है तुझको
मंदिर में शिवालों में
जिसने भी झांका अंदर
उसने ही तुझको पाया
प्रभु.....................

इतरा न अपने तन पर
ढलते हैं इसको जाना
नश्वर है सब यहां पर
मिट्टी की है ये काया
प्रभु......................

जीवन के तज झमेले
नाम हरि का तू ले ले
मानव जन्म है पावन
न कर तू इसको जाया
प्रभु.....................

राजेश सिंह
मुख्य प्रबंधक, इलाहाबाद बैंक

तमिल नाडु : विभिन्न प्रकार के संस्कार और उनका अर्थ

तमिलनाडु के बारे में सोचते ही , कावेरी नदी, आकाश को छूनेवाले गोपुरों से युक्त मंदिर ,'फ़िल्टर' कॉफी, इडली, मसाला दोसा, कांचीपुरम की रेशमी साड़ी आदि हमारे मानस पटल पर अनायास ही आते हैं।

तमिलनाडु में रहनेवाले विभिन्न प्रकार के विश्वास, संस्कार आदि के संबंध में जानने की कोशिश करेंगे तो हमें अनेक जानकारियाँ मिलेंगी। तमिलनाडु के लोग , पीढ़ी दर पीढ़ी से जो संस्कार आदि की रक्षा करते आ रहे हैं, उनके संबंध में, उनके पीछे रहनेवाले विश्वास के बारे में, मुझे जो जानकारी है, उसे आप लोगों के साथ बांटनेवाली हूँ।

1) कोलम :-प्रतिदिन सबेरे घर की दहलीज़ में लगाए जानेवाले कोलम –'कोलम' शब्द के लिए कोश में अर्थ ढूँढने पर हमें 'रंगोली' शब्द मिलेगा; लेकिन 'रंगोली','कोलम' से थोड़ा भिन्न है; रंगोली में विभिन्न रंगवाले पाउडरों का प्रयोग होता है; लेकिन कोलम मात्र 'सफ़ेद' रेखाओं से बना है; कोलम के दो उद्देश्य है :-

(अ) कोलम एक सकारात्मक अभिव्यक्ति है; अगर किसी के घर के द्वार पर 'कोलम' लगाया है तो इसका मतलब है, “हमारे घर में आप आ सकते हैं”। अगर 'कोलम' नहीं है तो इसका मतलब है,' हम आपका स्वागत करने की स्थिति में नहीं है। लेकिन एक बात है: आजकल अनेक लोग फ्लैट्स में रहते हैं, जहां कोलम लगाने की सुविधा नहीं रहती है; फिर भी जो लोग पारंपरिक अनुष्ठानों के अनुपालन में विश्वास रखते हैं, वे अपने घर के द्वार पर छोटा सा ही सही, कोलम ज़रूर लगाते हैं।

(आ) पारंपरिक संस्कारों को माननेवाले लोग चावल कूटकर आटा बनाकर उससे कोलम लगाते हैं। उन लोगों का मानना है कि कोलम में जो चावल का आटा है, उसे चींटी जैसी छोटे छोटे जीव खाते हैं।

(इ) मार्ग शीर्ष महीने के दौरान प्रातः काल, यानी 4.00 बजे से पहले ही उठकर कोलम लगाने की प्रथा है; इस महीने में तमिल नाडु के सभी मंदिरों में प्रातःकाल 4.00 बजे ही खुल जाते हैं। ऐसा करने के लिए निम्नलिखित कारण बताए जाते हैं

I. वैज्ञानिक रूप में यह मानते हैं कि मार्गशीर्ष महीने के दौरान वातावरण का 'ओज़ोन "(OOZON-O3)परत बहुत नीचे आ जाता है; तो इस महीने प्रातःकाल उठने से ओज़ोन परत का पूरा लाभ उठा सकते हैं;

II. पुराणों का विश्वास है कि मार्ग शीर्ष महीना, देवों के लिए प्रातःकाल है; यानि, मनुष्य का एक साल, देवों के लिए एक दिन है; तो मार्गशीर्ष महिना उनका प्रातः काल है; इसलिए, यह विश्वास किया जाता है कि इस समय उठने से भगवान की अनुभूति मिलती है; तमिल नाडु के सभी मंदिरों में इस महीने के दौरान, प्रातःकाल 4.00 बजे विशेष पूजाएं होती हैं;

III. तमिल नाडु में दो प्रकार के संप्रदाय अत्यंत प्राचीन है- शैव संप्रदाय एवं वैष्णव संप्रदाय। मार्ग शीर्ष महीने के दौरान वैष्णव संप्रदाय के लोग,'आण्डाल' के 'तिरुप्पावै' का पाठ करते हैं। शैव संप्रदाय के लोग 'श्री मणीक्कवासागर' द्वारा रचित 'तिरुवेम्पावई' का पाठ करते हैं। विश्वास है कि इस महीने,'तिरुप्पावै''तिरुवेम्पावई' का पाठ करनेवाले लोगों का जीवन उज्जवल बनेगा।

IV. अमावस्य के दिन में , जब तक जल एवं तिल श्राद्ध पूरा नहीं होता तब तक कॉलम न लगाना - तमिल नाडु के सभी ब्राह्मण परिवार में अमावस्या के दिन तिल एवं जल तर्पण देकर, अपने पूर्वजों को श्रद्धांजली देने की प्रथा है; जब तक यह संस्कार पूरा नहीं होता , तब तक द्वार पर कॉलम नहीं लगाते हैं; इसका कारण है - लोग मानते हैं कि उस दिन उनके पूर्वज उनके घर आकार उनके द्वारा दिये जानेवाले तिल एवं जल तर्पण को स्वीकार करेंगे। उस समय अन्य लोग आएंगे तो, पूर्वजों के लिए किए जानेवाली औपचारिकता में कमी आ सकती हैं;

2) विशेष पूजाओं के दिनों में आम के पत्तों से वंदनवार बनाकर अलंकृत करना: गणेश चतुर्थी, जन्माष्टमी, सरस्वती पूजा आदि दिनों में आम के पत्तों से वंदनवार बनाकर घर द्वार पर अलंकार करने की प्रथा है; कहीं-कहीं, सुपारी पत्तों से भी अलंकार करते हैं; विश्वास है कि आम के पत्तों में सकारात्मक शक्ति फैलाने की ताकत है; जो घर में आते हैं, उनके मन में सकारात्मक भावना पैदा करने के उद्देश्य से ऐसा किया जाता है;

3) शादी आदि में केले के पत्ते में खाना परोसना - दक्षिण के लगभग चारों राज्यों में केले के पत्तों में खाना परोसने की प्रथा है; इसके प्रमुख तीन कारण है;

(i) इन चारों राज्यों में केले के पेड़ बहुत है; केले में अनेक प्रकार हैं।

4) अगर घर में किसी को चेचक या संक्रामक रोग है तो घर के द्वार पर नीम के पत्तों को लटकाने की प्रथा है; इसके दो कारण हैं – (1) नीम के पत्तों को देखकर लोग समझ लेंगे कि अमुक घर में किसी को संक्रामक रोग है; और वे घर के अंदर नहीं आएंगे; (2) इसका वैज्ञानिक कारण है – नीम एक कीटनाशक है; और प्रभावी 'एंटि बायोंटिक' भी।

5) नींबू फल का प्रयोग पूजा में अधिक होता है; नींबू को काटकर उसमें तेल डालकर, दीप जलाने की प्रथा तमिल नाडु में अधिक है; यही नहीं, किसी बड़े व्यक्ति से मिलने जाते हैं तो उनको देखते ही, उनके हाथ में नींबू फल देने की प्रथा भी यहाँ अधिक है। इसका अनेक वैज्ञानिक कारण हैं : हम सबको मालूम है कि नींबू में 'सी' विटामिन अधिक मात्रा में है; लेकिन शायद हमें यह मालूम नहीं कि , नींबू रस की अपेक्षा नींबू के छिलके में 'सी' विटामिन और अधिक है; नींबू को हम अपने हाथ में रख लेंगे तो, किसी भी प्रकार की कृमि से (virus, bacteria आदि से) हमें सुरक्षा मिलेगी; क्योंकि नींबू एक उत्तम 'एंटि बायोटिक' है; जब नींबू के छिलके में दीप जलाते हैं, इससे 'कीटनाशक' प्रभाव पूरे वातावरण में फैल जाता है; विशेषकर, मंदिर आदि जगहों पर अनेक प्रकार के लोग आते हैं; ऐसे जगहों पर नींबू के छिलके में दीप जलाने पर सबको सुरक्षा मिलती है; हाल ही में अमेरिकी विश्वविद्यालय ने यह खोज की है कि कैंसर की कृमियों को मारने की ताकत , नींबू के छिलके में है; नींबू के छिलके में, कीमोथेरपी (chemotherapy) से भी 1000 गुने अधिक 'कैंसर को मिटाने की ताकत है; और कीमोथेरपी के कोई भी नकारात्मक पार्श्व प्रभाव इसमें नहीं हैं।

और एक बात है – तमिलनाडु में चेचक आने पर, किसी डॉक्टर के पास नहीं जाते हैं। क्योंकि चेचक को 'देवी माता' मानने की प्रथा यहाँ है; घर में अगर किसी को चेचक है, तो उस घर का

कोई 'देवी माता' के मंदिर आकर, मंदिर से, पूजा में प्रयोग किए गए पानी को ले जाकर, चेचक बाधित व्यक्ति को पिलाते हैं; इस प्रकार आनेवाले लोग अक्सर चेचक कृमि के वाहक (carrier of chicken pox virus) रहते हैं। उनके माध्यम से अन्य लोगों को चेचेक का वाइरस फैल सकता है; इससे सुरक्षित कर लेने के लिए, सामान्यतः देवी माता के मंदिरों के प्रवेश में एक दो नींबू रखने की प्रथा है; यही नहीं, देवी माता को 'नींबू से बनी माला' अर्पित करने की भी प्रथा है, और भक्त लोगों को एक-एक नींबू भी प्रसाद के रूप में दिया जाता है; यह प्रथा केरल, आंध्र और कर्नाटका में भी है;

6) मंदिरों में नमक एवं काली मिर्च समर्पित करने की प्रथा : दक्षिण के शैव मंदिरों एवं देवी मंदिरों में जाएँगे तो वहाँ एक दृश्य सामान्य रूप में मिलेगा; इन मंदिरों में एक स्थान में, बहुधा नवग्रह मंडप के पास, या प्रवेश पर सब लोग नमक (सेंधा नमक) और काली मिर्च डालते हैं; कुछ मंदिरों में खासकर कुंबकोणम में रहनेवाले नवग्रह मंदिरों में और प्रमुख रूप में 'मायिलाडुतुरई" के पास स्थित 'वैदीश्वरन' मंदिर में आनेवाले भक्तलोग एक दो काली मिर्च और सेंधा नमक लेकर खाते भी है; इसके पीछे रहनेवाले वैज्ञानिक बात क्या है ?

तमिलनाडु के गावों में एक कहावत है-' अपने जेब में थोड़ा काली मिर्च रख लेंगे तो, विरोधी के घर में भी खाने के लिए जा सकते हैं, जंगल में भी घूम सकते हैं" अर्थात , काली मिर्च में

किसी भी प्रकार के विष को तोड़ने की ताकत है; किसी विषैले कीड़े आदि काटने से , विष रक्त में जाकर घुल जाता है; रक्त से विष को अलग करके बाहर लाने में काली मिर्च अत्यंत असरदार है; इसी प्रकार पानी में रहनेवाली कृमियों से लड़ने की ताकत 'सेंधे नमक' में है; आपको यह मालूम होगा की, गले में संदूषण (throat infection) हो गया तो हम नमक मिश्रित पानी से कुल्ला करते हैं; सेंधे नमक से कुल्ला करते हैं तो अधिक असर रहता है; यात्रा करते समय हम विभिन्न जगह के पानी पीते हैं और हमारा गला संदूषित होने का अधिक संभावना होती है; इसलिए अनेक मंदिरों में प्रवेश पर या किसी प्रमुख स्थान पर नमक डालकर रखते हैं; यह वातावरण में रहनेवाले संदूषण करनेवाली कृमियों के प्रभाव को कम करता है;

7) देवी मंदिरों में और बड़े-बड़े जमींदारों के घर के पीछे सांप के लिए पुट्टा रखना :

तमिलनाडु के अनेक देवी मंदिरों के पीछे बड़े-बड़े नीम , पीपल आदि पेड़ रहते हैं; इन पेड़ों के नीचे सांप के पुट्टे रहते हैं। कुछ लोग पुट्टे में दूध, अंडे आदि चढ़ाते भी हैं। इस तरह करने का कारण क्या है ? एक तो यह है कि , ये लोग सांप को दैव मानते हैं; इसलिए पूजा करते हैं; दूसरा कारण इस प्रकार है – यद्यपि सांप से लोग डरते हैं, सांप हमारे लिए अत्यंत आवश्यक है; खेत के फसल में जब धाने आने लगते हैं, तब उन धानों को खाने के लिए बहुत सारे चूहे आते हैं; ये सांप इन चूहों को खाकर धानों की रक्षा करते हैं। और हमारे पूर्वज ने इस बात पर ध्यान देते आए हैं कि सांप भौगोलिक चक्र की एक कड़ी है- वनों को काटकर जब नगर बनाने की प्रक्रिया हो रही थी, तो जंगल एवं वनों में रहनेवाले सांप किंकर्तव्य विमूढ़ होकर मनुष्यों के स्थान में आने लगे; इस स्थिति से बचने के लिए, जहां-जहां सांप के पुट्टे थे, उनको वैसे ही रख दिया गया ; उनके पास के पेड़ को भी ऐसे ही छोड़ दिया गया ;आनेवाली पीढ़ी भी इसकी रक्षा करें, इसे ध्यान में रखते हुए , सांप के पुट्टे की रक्षा को एक धार्मिक विश्वास के साथ जोड़ दिया; इसलिए आज भी सांप के पुट्टे में दूध एवं अंडे का नैवेद्य चढ़ाने की प्रथा दक्षिण में है;

8) विभिन्न प्रकार के पत्तों को धार्मिक क्रियाओं के साथ संबंध बनाना: नीम के पत्ते, तुलसी के पत्ते, विल्व के पत्ते, दूब (Bermuda grass) आदि को पूजा में एवं अनेक धार्मिक संस्कारों में शामिल किया गया है। इन पत्तों में अनेक रोग निवारक क्षमताएं हैं; तुलसी के पत्ते कफ, फेफड़े संबंधी रोग आदि सबके लिए उत्तम निदान है; प्रति-दिन एक विल्व पत्र का सेवन करने से हृदय रोग से आराम मिलता है; दूब का रस मधुमेह, हृदय रोग तथा नसों के लिए उत्तम उपचार है; इन पत्तों को विभिन्न पूजा विधियों में शामिल करके समाज में इनके लिए महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है; इस कारण से सब लोग इन पौधों की सुरक्षा करते हैं और इन्हें काटने और नष्ट करने से हिचकते हैं।

9) दक्षिण दिशा की तरफ घर का द्वार का निर्माण करना : तमिलनाडु में लोग बहुधा अपने घर का द्वार दक्षिण दिशा की तरफ निर्मित करना ही चाहते हैं; इसका प्रमुख कारण है, तमिलनाडु के दक्षिण में समुद्र है, और दक्षिण की ओर से आनेवाली हवा ठंड रहती है;

10) चंद्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण के समय व्रत रखना : तमिल नाडु तथा अन्य दक्षिणी प्रदेशों में सूर्यग्रहण और चंद्रग्रहण के समय खाली पेट रहने की प्रथा है; यानी, चन्द्र ग्रहण या सूर्यग्रहण शुरू होने से 5 घंटे पहले ही खाना पीना आदि सभी पूरा कर लेते हैं; जब ग्रहण शुरू होता है, तब पेट खाली रहना है; वैज्ञानिक कारण यह बताया जाता है कि ग्रहण के समय पेट में पाचन शक्ति कम रहती है और इसलिए उस समय पेट को खाली रखना है;

समाहार : हर प्रदेश में विभिन्न प्रकार के विश्वास, संस्कार एवं अनुष्ठानों का अनुपालन होता है; हर विश्वास, हर संस्कार के पीछे कारण हैं; इन बातों को जानना बहुत आवश्यक है; अगर सभी प्रदेशों को मिलाकर इस विषय पर एक सेमिनार रखेंगे तो हमें बहुत कुछ मिलेगा; इस दिशा में काम शुरू करना है;

डॉ. एस विजया
सहायक महाप्रबन्धक,
स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया
स्थानीय प्रधान कार्यालय, चेन्नै

विश्वास की पंचायती

पूरे मोहल्ले में आज सुबह से ही चर्चा थी। क्या बच्चे, क्या बूढ़े ....क्या औरत, क्या मर्द? सभी के ज़ुबान पर आज पंचायत भवन में होने वाली पंचायती की ही बात थी। और हो भी क्यों ना ? पिछले एक साप्ताह से हो रहे नाटक का कोई फ़ैसला जो होने जा रहा था। फ़ैसला भी किसी ग़रीब-गोरू के मसले का नहीं था। मामला, महेश बाबू के एकलौते बेटे राकेश और उसकी घरवाली के वैवाहिक जीवन से संबंधित था। महेश बाबू, जो गाँव में पैसे वालों की फेहरिस्त में शामिल ज़रूर थे, लेकिन समाज में इज़्ज़त के नाम पर बस इतना ही कि लोग उनके सामने तो कुछ नहीं कहते मगर पीठ पीछे बुराई करने से कोई नहीं चूकता। और ये सब महेश बाबू और उनके बेटे राकेश के व्यवहार के कारण था।

पिछले एक सप्ताह से जो बातें छन-छन कर लोगों के पास आ रही थी, वो ये कि, कोई कहता :-"राकेश की पत्नी (मीरवा, हाँ! यही नाम था उसका) का चाल-चलन ठीक नहीं।" कोई कहता:- "शादी के पहले से ही इसका चक्कर किसी लड़के से है, और-तो-और शादी के बाद भी वो उससे मिलती है।" जबकि मोहल्ले के मर्दों के बीच जो चर्चा है वो इस मुद्दे को दूसरा ही रंग देते हैं। बात कुछ ऐसी है कि राकेश का पड़ोसी "पांडे जी"का लड़का मनीष बाबू जो कि राकेश का हम उम्र भी है; कह रहा था:- " ये सब तो राकेश का एक बहाना है। उस भली औरत से छुटकारा पाने का/ दर असल सच्चाई तो ये है कि राकेश का ही किसी बाहर वाली से रिस्ता है। सुना है वह लड़की राकेश के ही कंपनी के किसी बड़े मुलाज़िम की बेटी है। और-तो-और महेश बाबू भी दहेज की लालच में राकेश की हाँ में हाँ मिला रहे हैं।

मोहल्ले की "लज्जो चाची" कहती:- पैसों की ऐसी भी क्या लालच ? जिसके लिए बेटे-बहू और घर-परिवार की इज़्ज़त ही समाज में उछाला जाए। वैसे भी "मीरवा" के मायके वालों से क्या कम पैसे लिए थे शादी के वक़्त ? साढ़े तीन लाख रुपये नगद, चार तोले के जेवरात, गाड़ी, घर का सारा सामान और ना जाने क्या-क्या ?? मोहल्ले की सारी औरतें लज्जो चाची की बातें गौर से सुनती। वैसे भी उनकी बातों में सच्चाई थी। गाड़ी, घर का सारा सामान तो मोहल्ले के लोगों ने भी देखा था और आज, राकेश और मीरवा के शादी को कुछ ही बरस हुए हैं कि पंचायती बैठाई जा रही है। अब देखें, शाम की पंचायती में क्या फ़ैसला आता है ? सप्ताह भर से घर में हो रहे कलह के कारण, मीरवा को उसके पिता अपने साथ ले गये। इतना तो तय है कि आज की पंचायती में उसके मायके वालों की तरफ से भी कुछ लोग आयेंगे।

शाम के चार बजे हैं। हालाँकि पंचायत का समय पाँच बजे का रखा गया है। धीरे-धीरे लोग इकट्ठा होना शुरू हो गये हैं। सतिन्दर बाबू, प्रकाश लाल, बलराम भैया, कन्हैया लाल, लक्खन चाचा, गोविंद बाबू, मीरवा के मायके की तरफ से उसके पिता पारस बाबू, अरुण बाबू, राजकिशोर सिंह, फ़ौजी सूबेदार और कुछ अन्य गणमान्य लोग भी इस पंचायती में शामिल होने के लिए आए थे। शाम के पाँच बजते-बजते पंचायत भवन लगभग भर गया। दोनों पक्ष की सहमति से वहाँ मौजूद लोगों में से ही पंच (पाँच लोगों को) चुना गया, जिसमें कि सतिन्दर बाबू को सर्व-सम्मति से प्रमुख नियुक्त किया गया। सतिन्दर बाबू गाँव में सबसे वरिष्ठ होने के साथ-साथ गुणी, अनुभवी और सबके लिए आदरणीय भी थे। जिन्हें दिन-दुनियाँ की जानकारी थी और जिनकी सोच और फ़ैसले का सब आदर भी करते थे। मीरवा के पिता पारस बाबू को भी सतिन्दर बाबू के प्रमुख चुने जाने पर कोई आपत्ति नहीं थी। इस तरह पंचायत की कार्यवाही शुरू की गयी।

पंचायत प्रमुख का आदेश पाकर कन्हैया लाल ने पंचायत बुलाए जाने का असल कारण पढ़कर सुनाया कि "आज की पंचायत श्री महेश बाबू के एक मात्र सुपुत्र श्री राकेश और उसकी धर्म-पत्नी श्रीमती मीरवा देवी के वैवाहिक कलह को शांतिपूर्वक सुलझाने हेतु बुलाया गया है। जिसमें कि श्री राकेश वादी पक्ष जबकि मीरवा के पिता श्री पारस बाबू प्रतिपक्ष की भूमिका में हैं।"

सतिंदर बाबू ने बैठे-बैठे ही कहा:- "तो हाँ भाई! दोनों पक्ष एक-एक कर अपनी-अपनी बात पंचायत के सदस्यों के सामने रखें।"

वहाँ मौजूद पीछे के कतार में बैठे लोगों के बीच आपस में खुसुर-फुसुर शुरू हो गयी जिससे कि माहौल में थोड़ी हलचल होने लगी। इसी बीच राकेश अपनी बात कहने के लिए उठ खड़ा हुआ।

राकेश:- "मैं पंचायत सदस्यों एवं प्रमुख जी...." इतने में वहाँ मौजूद कुछ सदस्य ने एक साथ राकेश को बीच में ही रोकते हुए

कहना शुरू किया, जिसमें कि बलराम भैया की आवाज़ कुछ तेज़ थी :- "अरे, पहले यहाँ उपस्थित प्रमुख जी एवं सभी सदस्यों का आदर-पूर्वक संबोधन तो करो।"

"कहो— माननीय श्री प्रमुख महोदय, उपस्थित सदस्य गण से मैं कुछ कहने की अनुमति चाहता हूँ.................बुडबक, इतना भी नहीं आता है ?"—बलराम भैया बोले।

बलराम भैया की बातों में और लोगों ने भी हाँ-में- हाँ मिला दिया। राकेश ने बलराम भैया और बाकी सदस्यों को एक नज़र देखा और फिर से कहना शुरू किया :" माननीय श्री प्रमुख महोदय, उपस्थित सदस्य गण से मैं कुछ कहने की अनुमति चाहता हूँ। मैं इस पंचायत से ये कहता हूँ कि मुझे अपनी पत्नी मीरवा से तलाक़ चाहिए और इस मामले में प्रमुख महोदय जी कोई हल निकाले।"

राकेश की बात ख़त्म होने से पहले ही कई सारे लोग एक साथ कहने लगे:-" भाई, ऐसे कैसे ? बिना किसी मुद्दे के, बिना किसी कारण के आप तलाक़ की बात कैसे बोल सकते हैं ? पहले बताइए तो सही, आप क्यों लेना चाहते है तलाक़ ?"

इसी बीच कन्हैया लाल ने राकेश की ओर होकर कहा:- पहले आप सभा के लोगों और प्रमुख जी को बताओ तो सही, आपको क्यों चाहिए ? ऐसा क्या हो गया है कि शादी हुए अभी 4-5 साल ही हुए हैं आप तलाक़ लेने की बात कर रहे हो ?"

इन सब में पारस बाबू गुम-सूम होकर, बिना कुछ बोले सभी की बातें सुन रहे थे, लेकिन उनके मन में चल बहुत कुछ रहा था। इधर राकेश और उसके बाप महेश बाबू के इस करतूत पर फ़ौज़ी सूबेदार को बहुत गुस्सा आ रहा था, लेकिन उसने भी खुद को रोके रखा था।

राकेश ने आगे कहना शुरू किया :- "मीरवा का बर्ताव मेरे और मेरे परिवार के प्रति ठीक नहीं है। ना तो वह ठीक से पकाती-खिलाती है, और ना ही मेरे रिश्तेदारों को इज़्ज़त करती है, जिससे कि पिछले कुछ दिनों से मेरे घर में लड़ाई-झगड़े हो रहे हैं। ये बात पूरे मुहल्ले को मालूम है/" इतना कहकर राकेश चुप हो गया।

कन्हैया लाल ने राकेश से पूछा :-" और भी कुछ है कहने को?"

राकेश ने "नहीं" के संकेत में अपनी सर हिला दिया।

सतिंदर बाबू बोले:- " बस इतनी-सी बात पे आप लोग पंचायती बैठा लिए ? ये अच्छी बात है क्या ? वैवाहिक जीवन में लड़ाई-झगड़े कहाँ नहीं होते ? ये आपके घर का मामला था, आपस में मिल-बैठकर इस मुद्दे को सुलझाना था। और नहीं तो लड़की के माँ-बाप से बात करते। आप सीधे घर के मुद्दे को इस तरह पंचायत में लाएँगे तो बदनामी तो आपकी ही होगी ना ?"

"लेकिन प्रमुख जी, मीरवा का एक दूसरे लड़के से चक्कर (प्रेम-संबंध) भी है...":- राकेश ने कहा।

इतना कहना था कि फ़ौज़ी सूबेदार और अरुण बाबू गुस्से से तिलमिला उठे। दोनो एक-साथ उठ खड़े हुए।

"ज़बान संभाल के बात करो राकेश बाबू। तुम्हें शर्म नहीं आती, अपने ही घर की बहू-बेटी पर इस तरह का लांछन लगते.. ?":--अरुण बाबू बोले।

इधर महेश बाबू भी अपने बेटे के बचाव में उठते हुए बोले:- "देखिए सतिंदर बाबू....! सच बात कैसी कड़वी लगी इनको। देखिए........ कैसे तिलमिला रहे हैं...!!"

पारस बाबू को क्रोध भी आ रहा था, और दुख भी हो रहा था कि भरे समाज में उनकी बेटी पे कीचड़ उछाला जा रहा है और वे कुछ बोल भी नहीं पा रहे थे।

महेश बाबू का कहना अभी ख़त्म नहीं हुआ था। आगे बोले :- " पूछिए, पारस बाबू यहीं मौजूद है। पूछिए, कि शादी से पहले उनकी बेटी का किसी लड़के से चक्कर(प्यार-मोहब्बत) रहा है कि नहीं ? पूछिए................उस चिट्ठी के बारे में जो किसी ने मेरे पास भेजा था, जिसके बारे में मैंने खुद पारस बाबू से बात की थी।"

शादी से पहले किसी चिट्ठी के बारे में सुनते ही, पूरी सभा में खुसुर-फुसुर शुरू हो गयी। सब आपस में ही अपनी-अपनी

समझ से तर्क देने लगे। सभा की सुगबुगाहट इतनी बढ़ गयी कि, गोविंद चाचा को खड़े होकर कहना पड़ा :- "भाई आप लोग शांति बनाए रखिए। शांति रखिए तभी ना, कार्यवाही आगे चल पाएगी।" इतना कहकर वे बैठ गये। सभी लोग शांत हो गये, फिर भी पीछे बैठे कुछ लोगों की हल्की-हल्की आवाज़ें आ ही रही थी।

इस बार सतिंदर बाबू ने मीरवा के पिता से पूछा :-" कहिए पारस बाबू...। इस बारे में आपका क्या कहना है ? क्या ये चिट्ठी वाली बात सच है ?"

पारस बाबू खड़े होते हुए बोले :-" ये कैसी बात कर रहे हैं, महेश जी ? सच्चाई क्या है आपको भी पता है। वो तो मेरी बेटी का बचपना था। कोई कुछ भी लिखकर आपको दे देगा तो क्या आप उसे सच मान लेंगे ? क्या मेंरी बेटी अब आपकी बेटी नहीं है .... क्या आपकी घर की इज़्ज़त नहीं है ?"

"अर्ररे ! रहने दीजिए, पारस बाबू। हमने भी दुनियाँ देखी है। इस बचपन की नादानियों के नाम पर आज के बच्चे क्या-क्या कर गुज़रते हैं, जो हमें भी पता है।"—महेश बाबू ने उपहास भरे शब्दों में कहा।

इतना सुनते ही पारस बाबू जैसे अवाक से रह गये। उनका सारा शरीर शिथिल पड़ गया। उन्हें क्रोध तो बहुत आ रहा था परंतु वे निर्णय नहीं कर पा रहे थे कि ये क्रोध किस पर था ? मीरवा के लिए योग्य वर नहीं चुन पाने के लिए खुद पर या मीरवा के बचपने.........नादानियों के कारण उसपर लग रहे लांछन के लिए खुद मीरवा पर ?

इधर मीरवा के जीवन में सप्ताह भर से हो रहे इन तमाम घटनाओं की जानकारी "सागर" तक भी पहुँच चुकी थी । दरअसल सागर ही वो लड़का था जो मीरवा को चाहता था....... प्यार करता था और इस बात की गवाह मीरवा के मायके में, उसकी मोहल्ले की एक-दो सहेलियाँ भी थी। शायद उन्हीं में से से किसी ने इन सारी बातों की खबर सागर को दी थी। उन दिनों सागर और मीरवा के प्रेम-प्रसंग की कुछ-कुछ चर्चा गली में भी होने लगी थी, लेकिन मीरवा के घर वालों को ही शायद ये रिश्ता मंजूर नहीं था और इसी कारण, जिस दिन मीरवा की शादी दूसरे गाँव में राकेश से हुई, उसी दिन सागर अपना घर......वो मोहल्ला...........वो गाँव छोड़कर दूर शहर में आ गया। शायद ये सोच कर कि कहीं उसका वहाँ रहना मीरवा के वैवाहिक जीवन में दुख का कारण ना बन जाए और शायद इस तरह वो मीरवा को भुला भी सकेगा। परंतु उसे क्या पता था कि गुज़रे दिनों के प्यार की खातिर उसे फिर से एक बार इम्तिहान से गुज़रना होगा और जिसका परिणाम उसे कुछ भी हासिल नहीं होने वाला।

जैसे-जैसे शाम गहराती जा रही थी, पंचायत की सभा, शोर-शराबे में तब्दील हो गया। एक पक्ष का, दूसरे पक्ष पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया। इस शोर-गुल में कौन क्या कह रहा है, किसी को ना तो कुछ सुनाई दे रहा और ना ही कोई कुछ समझ पा रहा है। पारस बाबू ज़्यादातर चुप ही दिखाई दिए। इस बीच सागर भी भीड़ को चीरते हुए सामने वाली कतार में जा खड़ा हुआ, जहाँ से वो सभी को आसानी से देख-सुन सकता था। इधर बार-बार कहने पर भी जब लोगों का शोर शांत नहीं हुआ तो सतिंदर बाबू ने ज़ोर से लगभग आख़िरी बार कहा:- "देखिए, यदि आप लोग इसी तरह शोर मचाते रहेंगे तो ये पंचायत बिना किसी निर्णय के ही खारिज़ करनी पड़ेगी। मैं आख़िरी बार कहता हूँ, शांत रहिए........।"

उनकी बात का महत्व देते हुए लगभग सभी लोग शांत हो गये, परंतु महेश बाबू मन-ही-मन अपना दाँत पीसते नज़र आए। अबकी बार फ़ौज़ी सूबेदार बोले:-" पंचायत सदस्यों और पंच-प्रमुख जी से मेरा आग्रह है, आपने राकेश और उनके पिता महेश बाबू के पक्ष को सुना, लेकिन आप लोगों ने उस लड़की..... उस अबला की बात नहीं सुनी जिसकी ज़िंदगी का फ़ैसला आप लोग करने जा रहे हैं। मेरा मत है कि कुछ भी निर्णय लेने से पहले उस लड़की को भी अपनी बात रखने का हक़ मिलना चाहिए। यदि पारस बाबू को कोई आपत्ति ना हो तो क्या आप "मीरवा देवी" को सभा की अगली बैठक में अपने साथ ला सकते हैं, जिससे कि वो अपनी बात पंचों के सामने रख सके। मीरवा को पंचायत में लाने की बात से कुछ लोग तो खफा हो गये और कुछ लोगों ने असहमति जाता दी। भीड़ से ही कुछ लोगों की आवाज़ आई," मर्दों की इस सभा में जनाना का क्या काम ? जो फ़ैसला करना है पंचायत अपनी सूझ-बुझ से करेगी। और वैसे भी उनका पक्ष रखने के लिए पारस बाबू तो हैं ही सूबेदार जी।"

इस बात को सुनकर, सागर से रहा ना गया। उसने अपनी जगह

से ही खड़े-खड़े थोड़ी तेज़ आवाज़ में सूबेदार जी का पक्ष लेते हुए कहा:- "क्यों नहीं आ सकती वो पंचायत में ? वो अपने हक़ के लिए खुद बात क्यों नहीं रख सकती ?" सागर की तेज़ आवाज़ और कम उम्र ने सबका ध्यान उसकी ओर खींचा और सभी उसकी ओर देखने लगे। यूँ तो मीरवा के मायके के सभी लोग सागर से परिचित थे। पारस बाबू अचानक से सागर को देख कर थोड़े चौंक गये। वहाँ सभा में मौज़ूद जो लोग सागर को नहीं जानते थे, वे सागर से ही पूछ बैठे :- भाई, आप कौन हो ?... ....आप किस अधिकार से इस पंचायत में बोल रहे हो ?

सागर ने आगे कहना शुरू किया :-"मेरा नाम सागर है। मैं श्री पारस जी के पड़ोस में ही रहता हूँ और मैं वो हूँ, जिसके नाम का इस्तेमाल कर राकेश जी और महेश बाबू अपनी ही बहू को भरी सभा में ला खड़ा किए हैं.......... अपने ही घर की इज़्ज़त को सरे-राह तमाशा बना रहे हैं। मैं पूछना चाहता हूँ राकेश जी से, क्या आपने इसी दिन के लिए अग्नि को साक्षी मानकर मीरवा जी से ब्याह रचाया था ?........... और जिसके गवाह इसी समाज के सौ-दो सौ आदमी थे। एक लड़की, मन्त्रोच्चार के साथ पढ़े गये चंद कसमों- वादों की खातिर अपने पीछे के तमाम रिश्ते-नाते, सारी उम्र की यादें, वो गली-मोहल्ला, गाँव-शहर छोड़कर, क्या इसीलिए आती है कि जब उसके पति का जी करेगा, वो उसे भरी सभा में बेइज़्ज़त कर सके ? राकेश बाबू, स्त्री तो हमारे भारतीय संस्कृति की मूरत होती है और हमारी संस्कृति कभी भी किसी नारी को ये नहीं सिखाता कि शादी के बाद वो अपने पति के अलावा अपने मन में किसी और के बारे में कोई विचार भी लाए। उसका पति चाहे जैसा भी हो, वही उसका परमेश्वर है। मैं पूछना चाहता हूँ, राकेश जी से एक ही घर में..... एक ही छत के नीचे इतने सालों रहने के बाद भी आपको अपनी पत्नी पर यकीन नहीं हो पाया और आपने उस इंसान से उसका नाम ज़ोड दिया जो उससे हज़ारों मील दूर है..... जो पिछले कई सालों से मीरवा से मिलना तो दूर, देखा तक नहीं। आप ने इस पंचायत में सिर्फ़ खुद को ही नहीं...... मीरवा को ही नहीं, बल्कि एक पति-पत्नी के बीच के विश्वास को भी भरी सभा में ला खड़ा किया है। मैं पूछना चाहता हूँ, इस समाज से, पंचायत में बैठे लोगों से, क्या शादी का बंधन इतना कमज़ोर होता है कि एक पति-पत्नी के बीच की दीवार को चंद मामूली अफवाहों से तोड़ा जा सके................? अगर शादी का यही मतलब है तो पंचायत को ऐसी शादी होने से ही रोकना चाहिए। आज आप लोगों का फ़ैसला चाहे जो भी हो लेकिन उससे पहले पंचायत और यहाँ मौज़ूद समाज के सभी लोग ये प्रण कर लें कि आज के बाद ना तो किसी शादी का आयोजन करेंगे और ना ही किसी शादी-समारोह में शामिल होंगे।

सागर की इन दलीलों से वहाँ मौज़ूद लोगों में किसी को कुछ कहने की हिम्मत नहीं हुई। बस आख़िरी कतार से कुछ हल्की आवाज़ें आई:- "जो भी हो, लड़का तो ठीक ही कह रहा है।"

कहीं से कोई और बात ना आते देख और माहौल को समझते हुए, सतिंदर बाबू ने सभा स्थगित कर दी। सभी लोग बिना किसी विचार-विमर्श के ही अपने-अपने घर की ओर रवाना हो गये। सागर भी अपनी राह चलता बना। यूँ तो रात के नौ बज रहे थे। अंधेरा भी गहराने लगा था, परंतु सच कहा जाए तो रौशनी की किरण अब फैली थी। एक ओर जहाँ राकेश को अपनी ग़लती का एहसास हो रहा था और मन-ही-मन उसे पछतावा भी हो रहा था, वहीं दूसरी ओर पारस बाबू भी अपने आप को दोषी मान रहे थे, कि काश ! अपनी बेटी की खुशियों की खातिर, उसकी पसंद को ही....... सागर को ही, दामाद के रूप में चुना होता। लेकिन वक़्त के लिखे को कौन बदल पाया है ?

अगली सुबह, मीरवा के मायके के दरवाजे पे दस्तक हुई। दरवाजा मीरवा ने ही खोला तो राकेश को अपने सामने पाया। दोनो की नज़र बस एक बार एक-दूसरे से टकराई, दोनो में से किसी ने कुछ नहीं कहा। मीरवा पलटकर आँगन की ओर बढ़ चली और वहीं अपने पति राकेश के लिए कुर्सी लगा दी। राकेश भी चुप-चाप बैठ गया। तब तक घर के बाकी सदस्य भी आँगन में आ पहुँचे थे। राकेश ने अपने सास- ससुर (मीरवा के माता-पिता) से कहा :- "मैं मीरवा को लेवाने आया हूँ। जो हुआ उसके लिए मैं शर्मिंदा हूँ, और आप सब से क्षमा चाहता हूँ/" मीरवा भी वहीं खड़ी होकर उनकी बातें सुन रही थी। लेवाने की बात सुन कर उसकी आँखों के कोनों पर आँसुओं की एक-दो बूँदें छलक आई जो उसकी खुशी की निशानी थी। खुशी इस बात की कि विश्वास की इस पंचायती में फ़ैसला उसके हक़ में आया था............. जीत उसकी हुई थी।

ललित कुमार

प्रबन्धक- अग्नि सुरक्षा
पंजाब नैशनल बैंक
अंचल कार्यालय, चेन्नै

'ग' क्षेत्र में 'ग' क्षेत्र

हिन्दी, राजभाषा नीति, उसका कार्यान्वयन, उसपर चेन्नै में... जहाँ आम धारणा तो यही है कि वातावरण हिन्दी के अनुकूल कम, प्रतिकूल ज़्यादा होगा। यानी 'ग' क्षेत्र में 'ग' क्षेत्र। इन सबमें आपसी सामंस्य बैठाकर समरस हो पाने की कल्पना मन में संशय पैदा करने के लिए पर्याप्त था। चेन्नै में राजभाषा के लिए अलग कार्ययोजना बनाकर चलना होगा। यहाँ राजभाषा नियमों का वर्चस्व मायने नहीं रखता। परंतु, जब यहाँ लोगों को, कार्यालय में कई साथियों को आदतन हिन्दी में बात करते देखा तो संशय कुछ कम हुआ। हिन्दीतर भाषी उच्च कार्यपालकों का सहजता से हिन्दी में ही बातचीत करते देखा तो ढाढ़स बंधा।

जिस प्रकार पानी को ऊपर से नीचे की ओर ले जाने की बजाय, नीचे से ऊपर की ओर ले जाने में अधिक ऊर्जा लगती है, उसी प्रकार राजभाषा का कार्यान्वयन भी निचले स्तर की अपेक्षा उच्च स्तर से नीचे की ओर ले जाना अधिक सरल और कारगर होता है। वही सुखद स्थिति यहाँ देखने को मिली, मन आश्वस्त हुआ। यहाँ का कर्मचारीवृंद अधिकतर तमिल भाषी/ ग क्षेत्र से हिन्दीतर भाषी हैं परंतु एक दूसरे के साथ हिन्दी में बोलते पाया वह भी आदतन, बड़ी सहजता के साथ। फिर तो इस विश्वास ने जोर पकड़ लिया कि यह सोच कतई सही नहीं है कि चेन्नै में हिन्दी में काम करना व कराना मूलधारा के विरुद्ध तैरने के बराबर है। वस्तुस्थिति कुछ और ही है। न केवल कार्यालय के अंदर अपितु, कार्यालय के बाहर, चेन्नै शहर में भी ऐसा कुछ देखने को मिला जिससे हिन्दी के प्रति स्वीकार्यता का प्रमाण ही कहा जा सकेगा। मुझे तीन आवासीय कॉलोनियों में हिन्दी सीखने के ट्यूशन बोर्ड लगे देखे- चकित मन से ये सुखद दृश्य देखा। हालांकि यह भी सर्वविदित सत्य ही है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में हिन्दी सीखने के लिए सर्वाधिक आवेदन चेन्नै केन्द्र में प्राप्त होते हैं जो कि तमिलनाडु से होते हैं। यह स्थूल प्रमाण है इस बात का कि हिन्दी अब स्वीकार्यता की परिधि से कहीं आगे बढ़कर अनिवार्यता की दिशा में चल पड़ी है। यह बात अब जनसामान्य में भी घर कर गई है कि हिन्दी का वर्चस्व संकुचित सोच से परे है और उन्होंने अपने घरों के बाहर ही बोर्ड लगाकर इसे सीखना व सिखाना शुरु कर दिया है। हिन्दी भाषा साहित्य तथा राजभाषा के दायरे को लांघकर अपनी एक सर्वव्यापी अस्तित्व बना कर बहुत आगे बढ़ गई है। हिन्दी अब तकनीकी की भाषा, रोज़गार की भाषा, विज्ञापन की भाषा, गीत-संगीत की भाषा, फिल्मों की भाषा, टीवी तथा मनोरंजन की भाषा, कारोबार की भाषा, सोश्यल मीडिया की भाषा के रूप में कई आयामों को छू रही है। हिन्दी अब भविष्य की भाषा के रूप में उभरकर आ रही है। हो भी क्यूं न, हिन्दी वह कड़ी है जो हमें अपनी परंपरा से जोड़े रखते हुए भविष्य की ओर ले जा सकती है और इस पूरे प्रक्रिया में कहीं भी किसी को भी न तो उनकी मातृभाषा को कमतर दिखाने का प्रयास कराती है और न ही अपनी जड़ों से कट जाने या संस्कारों का त्याग करने के लिए मजबूर करती है। बल्कि, एक ही वर्णमाला, एक ही उच्चारण लेकर चली एक ही जननी-संस्कृत से जन्मी, भारत में पनपी, भारत की संस्कृति को संजोए हुए यह भाषा हमें अपनी बृहत धरोहर का सम्मान करने पर बाध्य करती है। हिन्दी सीखना अब केवल एक औपचारिकता नहीं रही, अपितु हमारी अस्मिता की पहचान बन गई है, फिर देश के अंदर हो या बाहर। चाहे चन्नै हो या चाइना, विश्व की चौथी सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा होने के कारण हिन्दी की उपयोगिता और विस्तार न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी बढ़ती जा रही है। नहीं तो 150 विश्वविद्यालयों से भी अधिक देशों में यह पढ़ाई नहीं जा रही होती।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए किए गए प्रयास स्वतः ही अन्य भारतीय भाषाओं के भी विकास में परिणत होते हैं। जो तकनीकी शोध कार्य हिन्दी भाषा की दृष्टि से किये जाते हैं, वह स्वतः ही अन्य भारतीय भाषाओं पर भी लागू हो जाते हैं- उनके लिए अलग से कोई विशेष प्रयासों की आवश्यकता नहीं पड़ती। चाहे कुछ दशक पूर्व टीवी श्रृंखलाओं के एक साथ बहुभाषीय सीधे प्रसारण की बात हो या आज ट्विटर आदि सोशियल मीडिया पर, फ्लिपकार्ट, एमेज़ॉन जैसी ऑनलाइन बिक्री कंपनियों द्वारा हिन्दी में ऐप चलाना या फिर माईक्रोसॉफ्ट द्वारा एक साथ आठ भाषाओं में अपना नवीनतम उत्पाद बाज़ार में उतारना, ये सब केवल हिन्दी का बढ़ती उपयोगिता के ही कारण हो रहे हैं। हिन्दी के साथ-साथ अन्य भारतीय

भाषाओं का भी तकनीकी प्रयोग निरंतर बढ़ता जा रहा है। अपनी बिक्री बढ़ाने के लिए बहुभाषीय ऑनलाइन सुविधा उपलब्ध कराना अब इन कंपनियों की बाध्यता हो गई है भले ही राजभाषा प्रावधान उन पर लागू न होते हों। हमारे संविधान निर्माताओं ने अत्यंत दूरंदेशी होने का परिचय देते हुए इसे भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया। इसका बढ़ता प्रयोग हमारा बढ़ती पैठ का प्रमाण है। इसलिए, आइए, हिन्दी अपनाएँ। गलतियों के डर से हिचकिचाएँ नहीं, रुकें नहीं। एक तरफ तो हम भूगोलीकरण का हवाला देते हैं और दूसरी तरफ अपने ही देश के अंदर भाषाई भिन्नता को अपनी विशिष्टता बनाने के बजाय अपना अवरोधक बना देते हैं। साथ मिलकर चलने से कई रास्ते के रोड़े भी मीलपत्थर बन जाते हैं। समय के साथ चलना ही प्रगति है। हम सब अपने समिष्टि प्रयासों से राजभाषा कार्यान्वयन को गति दें सकेंगे, अपने वार्तालाप और फाइल कार्य, दोनों में प्रयोग करते जाएं। हम सब इसे राजभाषा नियमों की परिधि में लाएं और उसके आगे 'ग' क्षेत्र से 'ख' स्तर तक लाने का ध्येय रखें, इसे और अधिक व्यापकता और गहनता प्रदान करें।

इसलिए कदम और कलम दोनों बढाएँ. हिन्दी अपनाएँ, इसमें काम करें और कराएँ।

गौरी वी. एम.
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
अंचल कार्यालय, चेन्नै

बैंक ऑफ़ बडौदा, अंचल कार्यालय, चेन्नै द्वारा प्रशिक्षण कॉलेज बड़ौदा अकादमी चेन्नै में दिनांक 21.02.2019 को मातृभाषा दिवस मनाया गया। इस कार्यक्रम के दौरान सभी स्टाफ सदस्यों को अपनी- अपनी मातृभाषा में वार्तालाप करने एवं मातृभाषा को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस कार्यक्रम में सभी स्टाफ सदस्यों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया।

चेन्नै नराकास के द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की रिपोर्ट

वर्ष 2018 19 के दौरान चेन्नै नराकास के तत्वावधान में दो हिन्दी सेमिनार, तीन संयुक्त हिन्दी कार्यशालाएँ एवं राजभाषा अधिकारियों के लिए एक विशेष हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 29.03.2019 को चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बैंक/वि.सं के तत्वावधान में इंडियन बैंक एवं बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा संयुक्त रूप से गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी में "बैंकिंग में साइबर सुरक्षा" विषय पर हिन्दी में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में श्री पी सी दाश, महाप्रबंधक, इंडियन बैंक, श्री बी प्रिया कुमार, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी की निदेशक महोदया डॉ. गुणिता अरुण चंडोक, डॉ. एम सेल्वराज, प्राचार्य, गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी, डॉ. स्वाति पालीवाल, विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी तथा विभिन्न बैंकों व वित्तीय संस्थाओं के राजभाषा अधिकारी एवं गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी के छात्र – छात्राएँ उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का समन्वय गुरु नानक कॉलेज के हिन्दी विभाग ने किया।

सर्वप्रथम श्री अजय कुमार, मुख्य प्रबंधक (राभा), इंडियन बैंक एवं सदस्य सचिव, बैंक नराकास (बैंक/वि.सं) ने सबका स्वागत किया । इस संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री पी सी दाश, महाप्रबंधक, इंडियन बैंक ने की । उन्होंने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में "बैंकिंग में साइबर सुरक्षा" से जुड़ी कई महत्वपूर्ण बातों का जिक्र करते हुए कहा कि वर्तमान युग डिजिटल बैंकिंग का है और इस डिजिटल बैंकिंग में साइबर खतरा एक बड़ी चुनौती होगी जिससे निपटने के लिए हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है। सभी लोगों को साइबर सुरक्षा से जुड़ी सावधानियों को ध्यान में रखते हुए डिजिटल माध्यमों का उपयोग करना चाहिए । इसी क्रम में अन्य मंचासीन महानुभावों ने भी उक्त विषय पर अपने विचार साझा किए। तत्पश्चात इंडियन बैंक एवं बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा साइबर सुरक्षा पर पीपीटी प्रस्तुत किया गया एवं उक्त विषय पर 'प्रश्न एवं उत्तर' प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिनांक 08 जून 2018 को भी चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के बैंकों व वित्तीय संस्थाओं के राजभाषा अधिकारियों के लिए चेन्नै नराकास के तत्वावधान में भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 'बैंकिंग एवं आईटी' विषय पर एक दिवसीय हिन्दी सेमिनार का आयोजन किया गया। उक्त सेमिनार की अध्यक्षता श्री किशोर खरात, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडियन बैंक व अध्यक्ष, चेन्नै नराकास ने की । उक्त सेमिनार में श्री के बालू, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै, श्री आर केशवन, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज, चेन्नै, श्री अजय कुमार, सदस्य सचिव, चेन्नै, नराकास बैंक व वि.सं एवं सदस्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के राजभाषा प्रभारी भी उपस्थित थे। उक्त सेमिनार में 'बैंकिंग एवं आईटी' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। उक्त सेमिनार में बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के राजभाषा अधिकारीगण ने सहर्ष भाग लिया एवं इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

दिनांक 29.06.2018 को चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में भारतीय आयात निर्यात बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै के द्वारा अधिकारियों हेतु एक दिवसीय संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम, आंतरिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग, हिंदी यूनिकोड का परिचय एवं बैंकिंग शब्दावली इत्यादि पर व्याख्यान दिया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं से आये अधिकारियों ने भाग लिया। इस एक दिवसीय संयुक्त हिन्दी कार्यशाला के दौरान श्री अम्बरीश भण्डारी, उप महाप्रबंधक व क्षेत्रीय प्रबंधक, एक्ज़िम बैंक ने कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों को संबोधित किया। श्री अजयकुमार, सदस्य सचिव, नराकास (बैंक व वि.सं.) ने राजभाषा नीति एवं नियम विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वायन समिति बैंक व वि.सं. द्वारा दिनांक 31.10.2018 को सायं 3.30 बजे सदस्यों कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों एवं प्रभारियों के लिए 'राजभाषा कार्यान्वयन के नए आयाम' विषय पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन इमेज के कक्षा संख्या - 2 एमआरसी नगर राजा अण्णामलैपुरम चेन्नै 600028 में किया गया। श्री प्रकाश शुक्ल, संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार उक्त कार्यशाला के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने उपर्युक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। श्री अजयकुमार सदस्य सचिव बैंक नराकास ने भी राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

दिनांक 12.02.2019 को चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, चेन्नै के द्वारा अधिकारियों हेतु बड़ौदा अकादमी, चेन्नै में एक दिवसीय अंतर बैंक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम, आंतरिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग, हिंदी यूनिकोड का परिचय एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण, बैंकिंग शब्दावली एवं हिंदी शिक्षण योजना इत्यादि पर व्याख्यान दिया गया। इस कार्यशाला में चेन्नै स्थित विभिन्न बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों से 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दिनांक 11.03.2019 को चेन्नै बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, मण्डल कार्यालय, चेन्नै के द्वारा अधिकारियों हेतु एक दिवसीय तकनीकी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में राजभाषा नियम, अधिनियम, तकनीकी शब्दावली, पत्राचार में तकनीकी का प्रयोग, हिंदी यूनिकोड के माध्यम से टाइपिंग अभ्यास एवं हिन्दी में नई तकनीकी टूल पर चर्चा की गई। प्रतिभागियों ने तकनीकी कार्यशाला को अत्यंत उपयोगी बताया और अपने – अपने बैंक में हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने में तकनीकी का सहारा लेने का आश्वासन दिया।

सदस्य सचिव

नराकास चेन्नै (बैंक व वि.सं.)

"तू हस के जरा देख"

ये गुल भी तेरा है ये गुलिस्तान तेरा है
तू हस के जरा देख सारा जहान तेरा है

ये हरियाली तेरी है ये खुशहाली तेरी है
बादल पर जो छायी है वो लाली तेरी है
दमकता स्वर्ण आभा सा वितान तेरा है
तू हस के जरा देख सारा जहान तेरा है

चहकती हुई चिड़ियों की चहक भी तेरी है
महकते हुए फूलों की महक भी तेरी है
चमकता हुआ उगता बिहान तेरा है
तू हस के जरा देख सारा जहान तेरा है

बरसते हुए बारिश की बूंदे भी तेरी है
दहकते हुऐ सूरज की किरणें भी तेरी है
हवाओं ने जो छेड़ा है वो तान तेरा है
तू हस के जरा देख सारा जहान तेरा है

लहलहाते हुए फसलों की क्यारी तेरी है
मदमस्त हवाओं से भी यारी तेरी है
ये खेत तेरा है ये खलिहान तेरा है
तू हस के जरा देख सारा जहान तेरा है

राजेश सिंह
मुख्य प्रबंधक
इलाहाबाद बैंक

बैंक ऑफ़ इंडिया, अंचल कार्यालय, चेन्नै द्वारा आयोजित विभिन्न राजभाषा सम्बन्धी कार्यक्रम

कार्यक्रम 1. चेन्नै अंचल में हिन्दी माह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन 2018

चेन्नै अंचल और अंचल में स्थित सभी शाखाओं में 15 अगस्त 2018 से 14 सितंबर 2018 तक हिन्दी माह मनाया गया। यह माह "ग्राहक वृद्धि का मूल आधार - श्रेष्ठ सेवा,श्रेष्ठ व्यवहार" के रूप में मनाया गया। इसके अंतर्गत हिन्दी बैंकिंग शब्दावली, हिन्दी गीत गायन, हिन्दी सुलेख, तमिल सुलेख,हिन्दी नोटिंग, कविता पाठ और निबंध प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

14 सितंबर 2018 को आंचलिक कार्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। आंचलिक प्रबंधक श्री के वी प्रकाश ने कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उप आंचलिक प्रबंधक श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने समस्त बैंकिंग कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग और प्रचार प्रसार के लिए संकल्प दिलवाया। माननीय गृहमंत्री जी के संदेश का वाचन मुख्य प्रबंधक श्री बी बी घोलप ने किया। माननीय वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री जी का संदेश राजभाषा अधिकारी श्री बृजनन्द विश्वकर्मा द्वारा पढ़ा गया। आंचलिक प्रबंधक श्री के वी प्रकाश ने सभी स्टाफ को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। भारत एक बहुभाषी देश है। हिन्दी भारत बड़े भू-भाग में बोली जाती है। ये हमारी राजभाषा है। हिन्दी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। तदुपरान्त प्रतियोगिता के विजेताओं को आंचलिक प्रबन्धक ने प्रमाण पत्र और पुरस्कार प्रदान किया। इस अवसर पर बैंक के वरिष्ठ पदाधिकारी, स्टाफ यूनियन के महासचिव श्री पी सी श्रीधर, मुख्य प्रबंधक एस स्वामीनाथन के साथ अधिकारी और स्टाफ उपस्थित थे।

कार्यक्रम 2. राष्ट्रीय बैंकिंग समूह (दक्षिण) चेन्नै में हिन्दी माह एवं हिन्दी दिवस का आयोजन 2018 :-

राष्ट्रीय बैंकिंग समूह (दक्षिण)- चेन्नै में 15 अगस्त 2018 से 14 सितंबर 2018 तक हिन्दी माह मनाया गया।14 सितंबर 2018 को हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय बैंकिंग समूह (दक्षिण) के महाप्रबंधक श्री राज कुमार मित्रा ने हिन्दी दिवस संकल्प दिलवाया। बैंक के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री दीनबंधु मोहापात्रा के संदेश एवं माननीय वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री श्री अरुण जेटली जी के संदेश का वाचन किया गया। हिन्दी बैंकिंग शब्दावली एवं नोटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें सभी स्टाफ ने भाग लिया। प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कार दिया गया।

कार्यक्रम 3 . विद्यालय/महाविद्यालय में प्रतियोगिता का आयोजन:-

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा केन्द्रीय विद्यालय आईलैंड ग्राउंडस में 05.09.2018 को हिन्दी माह 2018 के अंतर्गत विद्यार्थियों के लिए "देश के आर्थिक उन्नति में सरकारी बैंकों का योगदान" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पुरस्कार वितरण आंचलिक प्रबंधक श्री के वी प्रकाश द्वारा किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए हिन्दी के महत्व पर चर्चा की। हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश्य पूरे देश में हिन्दी को बढ़ावा देना है। हिन्दी संघ की राजभाषा है और भारत में सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाती है। हिन्दी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व भी है। उन्होंने कहा कि बीओआई भारत सरकार की सभी योजनाओं को जन-जन के बीच पहुंचाने के लिए सदैव तत्पर है। बच्चों को सफलता के लिए कठिन परिश्रम करने का मूलमंत्र भी दिया। छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे देश में अब महिलाएं शीर्ष पदों पर आसीन हैं। बैंक में शीर्ष पदों को सुशोभित करने वाली महिलाओं का उन्होंने जिक्र भी किया।भाषण प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पाँच प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय और दो सांतवना पुरस्कार और प्रशंसा प्रमाण पत्र दिये गए। अन्य प्रतिभागियों को भी सहभागिता पुरस्कार

और प्रमाणपत्र दिये गए। विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्यश्री ज्योति, हिन्दी प्रवक्ता विनोद कुमार पाण्डेय, पुस्तकालय प्रभारी एपी सुदर्शन का बीओआई द्वारा सम्मान किया गया। इस अवसर पर बैंक ऑफ इंडिया के मुख्य प्रबन्धक एस स्वामीनाथन, विपणन प्रबंधक श्री संदीप साहू,विद्यालय के अन्य स्टाफ एवं विद्यार्थी भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी प्रवक्ता विनोद कुमार पाण्डेय ने किया। धन्यवाद ज्ञापन बैंक के राजभाषा अधिकारी बृजनन्द विश्वकर्मा द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम 4. मोगप्पेयर शाखा में ग्राहकों के लिए संगोष्ठी का आयोजन :-

मोगप्पेयर शाखा में 10.09.2018 को ग्राहक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें "बैंक ऑफ इंडिया – आपका बैंक, आपकी राय, आपके सुझाव" विषय पर चर्चा की गई। कार्यक्रम में वरिष्ठ शाखा प्रबंधक श्रीमती अल्ली ने सभी का स्वागत किया और कार्यक्रम की शुरुआत की। इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एसबीआई अधिकारी विद्यालय की पूर्व हिन्दी प्रवक्ता श्रीमती दवे थीं। उन्होंने "सरकारी बैंकों का देश की उन्नति में योगदान" विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। अन्य ग्राहकों ने भी अपने विचार साझा किए। राजभाषा अधिकारी ने आज के परिवेश में हिन्दी के महत्व को बताया। आंचलिक कार्यालय के विपणन वरिष्ठ प्रबंधक श्री निखिल साहनी, प्रबंधक श्री संदीप साहू भी इस मौके पर ग्राहकों को सहायता के लिए उपस्थित थे।

कार्यक्रम 5. विश्व हिन्दी दिवस- 2018

बैंक ऑफ इंडिया चेन्नै अंचल में 10 जनवरी 2018 को विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। चेन्नै अंचल की चेन्नै मुख्य शाखा और पॉण्डिचेरी शाखा द्वारा विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएं की गई। चेन्नै मुख्य शाखा द्वारा केन्द्रीय विद्यालय आईलैंड ग्राउंडस में 10 जनवरी 2018 को विश्व हिन्दी दिवस मनाया गया। इसके अंतर्गत कक्षा 11 और 12 के विद्यार्थियों के लिए 'मेक इन इंडिया' भारत आर्थिक शक्ति के रूप में' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें केन्द्रीय विद्यालय आईलैंड ग्राउंडस के विद्यार्थियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाषण दिया और रोचक ढंग से प्रस्तुति दी।

विद्यालय की तत्कालीन प्रधानाचार्या श्रीमती रानी राजन ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए हिन्दी के महत्व पर चर्चा की। मुख्य अतिथि सहायक महाप्रबंधक श्री हितेन्द्र नाथ श्रीवास्तव जी ने अपने सम्बोधन में बताया कि विश्व हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश्य विश्व में हिन्दी का प्रचार प्रसार करना है और हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रोत्साहित करना है। हिन्दी अपने आप में सक्षम भाषा है और विश्व कि सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में प्रमुख है। उन्होंने कहा कि हमारा बैंक भारत सरकार की मेक इन इंडिया योजना को सफल बनाने के लिए ग्राहकों की सभी जरूरतों में सहायता के लिए तत्पर है। निर्णायक मण्डल के रूप में बैंक ऑफ इंडिया के सहायक महाप्रबंधक अश्वनी कुमार नेगी, मुख्य प्रबंधक अनिमेष बरुआ, सुरक्षा प्रबंधक मेजर वी विजयलक्ष्मी उपस्थित रहीं। बैंक द्वारा विद्यालय के प्रधानाचार्या श्रीमती रानी राजन, हिन्दी प्रवक्ता श्री विनोद कुमार पाण्डेय, पुस्तकालय प्रभारी श्री ए.पी. सुदर्शन का सम्मान किया गया। तत्पश्चात उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले पाँच प्रतिभागियों प्रियंका कुमारी, आकाश, विपुल, प्रियदर्शिनी, आकांक्षा को क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय और दो सांत्वना पुरस्कार और प्रशंसा प्रमाण पत्र दिये गए। इसे चन्नैके प्रमुख हिन्दी समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया।

कार्यक्रम 6. लिपिक संवर्ग के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला -22-06-2018

स्टाफ प्रशिक्षण महाविद्यालय चन्नै में चन्नै अंचल द्वारा 22-06-2018 को लिपिक संवर्ग के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का उद्घाटन उप आंचलिक प्रबन्धक श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भारत सरकार के द्वारा दिये गए अनुदेशों के अनुपालन में किया जा रहा है। आज के परिवेश में हिन्दी सीखना सबके लिए लाभकारी है। हिन्दी अब कारोबार से भी जुड़ी है। हमारे देश के बड़े भूभाग में हिन्दी बोली जाती है, और हमारे बैंक के ग्राहकों का एक बड़ा समुदाय हिन्दी भाषी है। इस प्रकार हिन्दी का प्रयोग करके अधिक से अधिक ग्राहकों से संपर्क कर सकते हैं और कारोबार वृद्धि में भी सहायता दे सकते हैं। नवनियुक्त लिपिकों को बैंक में पदोन्नति के अवसर का लाभ लेने के लिए प्रेरित किया। अधिकारी वर्ग में स्थानांतरण पूरे भारत में कहीं भी हो सकता है। हिन्दी पूरे भारत की संपर्क भाषा है। अतः इस प्रकार हिन्दी सीखकर आसानी से अपना काम किया जा सकता है उन्होंने कार्यशाला की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दी।

मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री अजय कुमार ने कार्यशाला के " राजभाषा नीति, संवैधानिक प्रावधान, अधिनियम" सत्र का

प्रारम्भ किया। उन्होंने हिन्दी की आवश्यकता और इसके प्रचार प्रसार के लिए सरकार के द्वारा किए जा रहे उपायों पर चर्चा की। हिन्दी कार्यशाला भी उन्हीं का उपायों का एक भाग है। उन्होंने संविधान में राजभाषा संबंधी उपबंधों पर चर्चा की। संविधान के भाषा संबंधी अनुच्छेद 343 से 351 तक, राजभाषा अधिनियम 1963, धारा 3(3), राजभाषा नियम 1976, के सभी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की।पूरा सत्र रोचक और लाभकारी रहा। द्वितीय सत्र बैंकिंग शब्दावली एवं प्रशासनिक शब्दावली पर था। यह सत्र बैंक ऑफ बड़ौदा के प्रबंधक (राजभाषा) श्री बालमुरूगन ने लिया।

राजभाषा अधिकारी बृज नन्द विश्वकर्मा ने बैंक द्वारा हिन्दी सीखने के लिए दिये जाने वाले प्रोत्साहन, तिमाहीं रिपोर्ट भरना, हिन्दी माह का आयोजन करना, बैंक की तिमाही पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना, राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता विषय पर सत्र लिया। हिन्दी सीखने के लिए भारत सरकार के द्वारा उप्लब्ध कराए गए लीला (LILA) अप्लीकेशन के विषय में भी बताया गया।

कार्यक्रम 7. अधिकारी संवर्ग के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला - 27-11-2018

चन्नै अंचल में 27-11-2018 को अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में राजभाषा अधिकारी बृजनन्द विश्वकर्मा ने चन्नै अंचल के आंचलिक प्रबन्धक श्री के. वी. प्रकाश, एस. टी. सी. के प्रधानाचार्य श्री जी. उन्नीकृष्णन, इंडियन ओवरसीज़ बैंक से आए सहायक महाप्रबंधक श्री सुरेश कुलकर्णी का स्वागत किया और राजभाषा कार्यशाला का कार्यक्रम से सभी को अवगत कराया। एस.टी.सी. के प्रधानाचार्य श्री जी. उन्नीकृष्णन ने प्रतिभागियों को संबोधित किया।

कार्यशाला का उद्घाटन आंचलिक प्रबन्धक श्री के.वी. प्रकाश ने किया। उन्होंने विभिन्न शाखाओं से आए हुए अधिकारियों को बैंक में हिन्दी के महत्व को बताया। उन्होंने कहा कि बैंक में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाएँ। सरकारी बैंक होने के नाते हमें हिन्दी को भी बढ़ाना है। इसके साथ-साथ हमें अपने बैंक के कारोबार को बढ़ाना है। श्री सुरेश कुलकर्णी, सहायक महाप्रबन्धक (राजभाषा) ने कार्यशाला के " राजभाषा नीति , संवैधानिक प्रावधान, अधिनियम" सत्र का लिया। उन्होंने संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधानों के विषय में बताया। संविधान के भाषा संबंधी अनुच्छेद 343 से 351 तक, राजभाषा अधिनियम 1963, धारा 3(3), राजभाषा नियम 1976, के सभी महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की। द्वितीय सत्र बैंकिंग शब्दावली एवं प्रशासनिक शब्दावली पर था। यह सत्र श्री अजय कुमार, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), इंडियन बैंक द्वारा लिया गया। बैंक में प्रयोग होने वाले शब्दों के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बड़े ही अच्छे ढंग से सत्र में सभी की सहभागिता करवाई। प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से कार्यशाला को रोचक बनाया।

कार्यशाला के समापन सत्र में एस.टी.सी. के प्रधानाचार्य श्री जी. उन्नीकृष्णन ने सभी प्रशिक्षणार्थियों से पूरे दिन की कार्यशाला पर उनकी प्रतिक्रिया और प्रशिक्षण को बेहतर बनाने के लिए सुझाव मांगा। उन्होंने हिन्दी में काम काज बढ़ाने के लिए सबसे मिलकर काम करने को कहा। उन्होने बैंक के कारोबार विकास के साथ हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने की बात कही।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै - I

राजभाषा कार्यान्वयन मेंवर्ष 2018-19 के दौरान की गई गतिविधियाँ-

हिन्दी माह समारोह :-क्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै-1 में सितम्बर माह हिन्दी माह के रूप में मनाया गया। इस माह चार प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय और शाखाओं से स्टाफ सदस्यों ने बढ़- चढ- कर अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। 18 सितम्बर 2018 को पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया।

विजेताओं को पुरस्कार प्रदान करते हमारे अंचल प्रबंधक
श्री एस. केदारनाथ और मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक श्री (जे. मोहन)

हिन्दी प्रशिक्षण:- हिन्दीतर भाषियों को हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने के लिए आइओबी प्रवीण परीक्षा 17.02.2019 को आयोजन किया गया।

नराकास के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम :
चेन्नै नराकास के तत्वावधान में 02.11.2018 को अंतर बैंक हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी में आयोजित
“ बैंकिंग में साइबर सुरक्षा ” पर संगोष्ठी

दिनांक 29.03.2019 (शुक्रवार) को चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक/वि.सं) के तत्वावधान में इंडियन बैंक एवं बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा संयुक्त रूप से गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी में “बैंकिंग में साइबर सुरक्षा” विषय पर हिन्दी में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में श्री पी सी दाश, महाप्रबंधक, इंडियन बैंक, श्री बी प्रिया कुमार, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ बड़ौदा, गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी की निदेशक महोदया डॉ. गुणिता अरुण चंडोक, डॉ. एम सेल्वराज, प्राचार्य, गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी, डॉ. स्वाति पालीवाल, विभागाध्यक्षा, हिन्दी विभाग, गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी तथा विभिन्न बैंकों व वित्तीय संस्थाओं के राजभाषा अधिकारी एवं गुरु नानक कॉलेज, वेलच्चेरी के छात्र – छात्राएँ उपस्थित थे। इस कार्यक्रम का समन्वय गुरु नानक कॉलेज के हिन्दी विभाग ने किया।

सर्वप्रथम श्री अजय कुमार, मुख्य प्रबंधक (राभा), इंडियन बैंक एवं सदस्य सचिव, बैंक नराकास (बैंक/वि.सं) ने सबका स्वागत किया। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री पी सी दाश, महाप्रबंधक, इंडियन बैंक ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में “बैंकिंग में साइबर सुरक्षा” से जुड़ी कई महत्वपूर्ण बातों का जिक्र करते हुए कहा कि वर्तमान युग डिजिटल बैंकिंग का है और इस डिजिटल बैंकिंग में साइबर खतरा एक बड़ी चुनौती होगी जिससे निपटने के लिए हमें सतर्क रहने की आवश्यकता है। सभी लोगों को साइबर सुरक्षा से जुड़ी सावधानियों को ध्यान में रखते हुए डिजिटल माध्यमों का उपयोग करना चाहिए। इसी क्रम में अन्य मंचासीन महानुभावों ने भी उक्त विषय पर अपने विचार साझा किए। तत्पश्चात इंडियन बैंक एवं बैंक ऑफ बड़ौदा द्वारा साइबर सुरक्षा पर पीपीटी प्रस्तुत किया गया एवं उक्त विषय पर 'प्रश्न एवं उत्तर' प्रतियोगिता में विजयी छात्रों को पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिनांक 25 मई, 2018 को इमेज में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक / वि.सं.) की 64 वीं अर्धवार्षिक बैठक एवं संयुक्त हिन्दी माह पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियाँ

दिनांक 25 अक्टूबर, 2018 को इमेज में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (बैंक / वि.सं.), चेन्नै. की 65वीं अर्धवार्षिक बैठक की झलकियाँ

बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस समारोह - 2019

बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, चेन्नै में दिनांक 10.01.2019 को विश्व हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया. अंचल प्रमुख श्री राजेश मल्होत्रा, महाप्रबंधक ने इस समारोह की अध्यक्ष करते हुए हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए सबको प्रेरित किया. चेन्नै के वल्लियम्माल महिला कॉलेज की हिंदी विभागध्यक्ष डॉ. मंजू रुस्तगी, मुख्त अतिथि के रूप में पधारीं.सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी मात्र एक भाषा नहीं, राष्ट्रीय चेतना की संवाहिका भी है. विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं उपहार प्रदान किया गया. कार्यक्रम के दौरान सहायक महाप्रबंधक श्री बी प्रिया कुमार के कर कमलों से हिंदी टिप्पण कैलैंडर का विमोचन किया गया।

यूनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया, दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा आयोजित विभिन्न राजभाषा संबंधी कार्यक्रम

1. हिन्दी दिवस :-

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी दिवस का आयोजन 14.09.2018 को संपन्न हुआ। इस समारोह में उप महाप्रबंधक एवं मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक श्री प्रदीप कुमार मिश्र जी, सहायक महाप्रबंधक श्री वेंकटरामन जी के साथ चेन्नै के क्षेत्रीय निरीक्षण इकाई से सहायक महाप्रबंधक श्री सी बालाचन्द्रन जी, सर्विस शाखा के श्री गणेश जी और चेन्नै की विविध शाखाओं से आये अन्य प्रबंधक, अधिकारी एवं कर्मचारी गण उपस्थित हुए।

इस कार्यक्रम का प्रारंभ भारतीय शास्त्रीय नृत्य के साथ आरंभ हुआ। जिसमें नृत्य के जरिए भगवान की वंदना प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में प्रधान कार्यालय से प्राप्त गृह मंत्री, वित्त मंत्री एवं हमारे बैंक के कार्यपालक निदेशक जी के और प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी जी के संदेश पढ़कर सुनाया गया। समारोह में विविध कार्यालयों से और क्षेत्रीय कार्यालय के सभी वरिष्ठ

अधिकारीगणों ने अपने- अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए है । कार्यक्रम में शाखा से आये और क्षेत्रीय कार्यालय से उपस्थित अन्य अधिकारियों, कर्मचारियों ने अपने भाषण, कविता, गीत और उनके विचार प्रस्तुत किए।

इस हिन्दी दिवस समारोह के उपलब्ध में दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। उन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को इस हिन्दी दिवस समारोह में पुरस्कार प्रदान किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय राजभाषा दिवस :-

दक्षिण क्षेत्रीय कार्यालय में 10.01.2019 को अंतर्राष्ट्रीय राजभाषा दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें में दक्षिण क्षेत्र के अंतर्गत आने वाली शाखाओ से एवं क्षेत्रीय कार्यालय से कुछ अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम में प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था एवं विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया ।

नराकास के तत्वावधान में हिन्दी प्रतियोगिता :-

नराकास के तत्वावधान में युनाइटेड बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा दिनांक 26.10.2018 को हिन्दी शब्द निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन केनरा बैंक के क्षेत्रीय कर्मचारी प्रशिक्षण विद्यालय चेन्नै में हुआ।

दिनांक 11.03..2019 को चेन्नै नराकास (बैंक व वि.सं.) के तत्वावधान में ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स द्वारा अधिकारियों के लिए आयोजित एक दिवसीय तकनीकी हिंदी कार्यशाला की रिपोर्ट

दिनांक 11.03..2019 को चेन्नै बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, मण्डल कार्यालय, चेन्नै के द्वारा अधिकारियों हेतु केनरा बैंक, 770-ए, देवा टावर्स, अन्ना सालै, चेन्नै में एक दिवसीय तकनीकी हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्रीमती वी. भुवनेश्वरी, उप महाप्रबंधक व मण्डल अध्यक्ष, ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, चेन्नै और श्री अजयकुमार, सदस्य सचिव, नराकास, चेन्नै एवं मुख्य प्रबंधक, इंडियन बैंक ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। इस कार्यशाला में राजभाषा नियम, अधिनियम, तकनीकी शब्दावली, पत्राचार में तकनीकी का प्रयोग, हिंदी यूनिकोड के माध्यम से टाइपिंग अभ्यास एवं हिन्दी में नई तकनीकी टूल पर चर्चा की गई।

प्रतिभागियों ने तकनीकी कार्यशाला को अत्यंत उपयोगी बताया और अपने – अपने बैंक में हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने में तकनीकी का सहारा लेने का आश्वासन दिया।

दिनांक 12.02.2019 को चेन्नै नराकास (बैंक व वि.सं.) के तत्वावधान में अधिकारियों हेतु आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला की रिपोर्ट

दिनांक 12.02.2019 को चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, चेन्नै के द्वारा अधिकारियों हेतु बड़ौदा अकादमी, चेन्नै में एक दिवसीय अंतर बैंक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। बड़ौदा अकादमी, चेन्नै के लर्निंग प्रमुख एवं मुख्य प्रबंधक श्री मैनक बैनर्जी और चेन्नै नराकास के सदस्य सचिव एवं मुख्य प्रबंधक, इंडियन बैंक, श्री अजयकुमार द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन किया गया। इस कार्यशाला में राजभाषा नीति, नियम, अधिनियम, आंतरिक कामकाज में हिंदी का प्रयोग, हिंदी यूनिकोड का परिचय एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण, बैंकिंग शब्दावली एवं हिंदी शिक्षण योजना इत्यादि पर व्याख्यान दिया गया। इस कार्यशाला में चेन्नै स्थित विभिन्न बैंकों तथा वित्तीय संस्थानों से 24 प्रतिभागियों ने भाग लिया। श्री बालमुरुगन, प्रबंधक (राभा), बैंक ऑफ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, चेन्नै ने कार्यशाला का समन्वय किया। अंत में श्री प्रिया कुमार, सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, अंचल कार्यालय, चेन्नै ने सभी को धन्यवाद देकर कार्यशाला का समापन किया।

भारतीय रिज़र्व बैंक
राजभाषा कक्ष, चेन्नै

भारतीय रिज़र्व बैंक, चेन्नै कार्यालय में 01 से 15 सितंबर 2018 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्टाफ सदस्यों के लिए 12 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें स्टाफ सदस्यों ने उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यालय में हिंदी दिवस और विभागीय राजभाषा शील्ड समारोह का आयोजन 17 सितंबर 2018 को किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती अरुंधती मेच, क्षेत्रीय निदेशक ने की और डॉ. स्वाती पालीवाल, सहायक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, गुरूनानक कॉलेज चेन्नै मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

चेन्नै कार्यालय द्वारा 06 जून 2018 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में सदस्य बैंकों के राजभाषा अधिकारियों के लिए "बैंकिंग और आईटी पर हिंदी में सेमिनार" विषय पर एक दिन के सेमिनार का आयोजन किया गया। विभिन्न बैंको के 32 राजभाषा अधिकारियों ने सेमिनार में भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री किशोर खरात,अध्यक्ष,नराकास/ अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक इंडियन बैंक द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर डॉ के बालु, मुख्य महाप्रबंधक,भारतीय रिज़र्व बैंक,चेन्नै ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

नराकास (बैंक व वि.सं.) के तत्ववधान में दिनांक 31.10.2018 को सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों / प्रभारियों के लिए "राजभाषा कार्यान्वयन के नए आयाम" विषय पर आयोजित विशेष कार्यशाला

चन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक व वि.सं.) द्वारा दिनांक 31.10.2018 को सायं 3.30 बजे सदस्य कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों / प्रभारियों के लिए "राजभाषा कार्यान्वयन के नए आयाम" विषय पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन, इमेज के कक्षा संख्या - 2, एमआरसी नगर, राजा अण्णामलैपुरम, चेन्नै 600 028 में किया गया। सुश्री भाग्यलक्ष्मी पटनायक, उप महाप्रबंधक एवं प्रधानाचार्या, इमेज चेन्नै उक्त कार्यशाला के दौरान उपस्थित थी । श्री प्रकाश शुक्ल, संयुक्त निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार ने उपर्युक्त विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

श्री अजयकुमार , सदस्य सचिव, बैंक नराकास ने भी राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला एवं धन्यवाद ज्ञापित किया।

नराकास के तत्वावधान में आयोजित अंतर-बैंक हिन्दी प्रतियोगिताएँ

चेन्नै नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के बैंकों व वित्तीय संस्थाओं को राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी चेन्नै नराकास के तत्वावधान में सदस्य बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं द्वारा 12 अंतर-बैंक हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी वर्ग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिन्दी माह 2018 के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को दिनांक 28.05.2019 को आयोजित नराकास की 66वीं बैठक के दौरान श्री वी.वी. शेणॉय, कार्यपालक निदेशक, इंडियन बैंक, श्री कुमार पाल शर्मा, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, कोच्चि, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्रीमती एन. मोहना, प्रभारी अधिकारी,

महाप्रबंधक, भारतीय रिजर्व बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै, श्री आर केशवन, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, स्टाफ प्रशिक्षण कॉलेज, चेन्नै एवं श्री ए रामू, महाप्रबंधक, कॉर्पोरेट कार्यालय, इंडियन बैंक के करकमलों से विभिन्न बैंकों द्वारा आयोजित 12 हिन्दी प्रतियोगिताओं में विजयी हुए 41 विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। इसके साथ ही सर्वाधिक पुरस्कार प्राप्त करने पर इंडियन बैंक को 'चेम्पियन ट्रॉफी' से नवाजा गया। इसी क्रम में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया को द्वितीय एवं भारतीय रिज़र्व बैंक को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रायोजक बैंकों को भी प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से शील्ड वितरित की गईं।

सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दिनांक 14/09/2018 को आयोजित हिन्दी दिवस समारोह एवं हिन्दी प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण

इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै में हिन्दी माह 2018 का आयोजन

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा स्टाफ सदस्यों के मध्य राजभाषा के प्रति चेतना लाने के उद्देश्य से इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै में दिनांक 12.08.2018 से 14.09.2018 तक "हिन्दी माह" का सफल आयोजन किया गया। इस दौरान स्टाफ सदस्यों एवं उनके बच्चों के लिए कुल 13 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी स्टाफ सदस्यों एवं उनके बच्चों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। हिन्दी माह 2018 का आगाज स्टाफ सदस्यों के बच्चों के लिए 12.08.2018 को आयोजित कविता पाठ, चित्रांकन तथा निबंध लेखन प्रतियोगिताओं के साथ किया गया। इसके अलावा स्टाफ सदस्यों के लिए निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा कुल 79 विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

प्रतियोगिताएँ

1. हिन्दी गीत गायन प्रतियोगिता
2. वर्तनी सुधारें प्रतियोगिता
3. हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता
4. व्यक्तित्व पहचानें प्रतियोगिता
5. हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता'
6. अपने भारतीय भाषाओं को जानें' प्रतियोगिता
7. मूक पहेली
8. हिन्दी शब्दावली एवं टिप्पण प्रतियोगिता
9. हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिता

10. अपने भारत को जानें प्रतियोगिता (कार्यपालकों के लिए)हिन्दी माह – 2018 के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण का आयोजन दिनांक 27.09.2018 को इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै में किया गया, जिसमें इंडियन बैंक के कार्यपालक निदेशकगण श्री ए एस राजीव तथा श्री एम के भट्टाचार्य की गरिमामयी उपस्थिति रही। इंडियन बैंक, के महाप्रबंधक (मासंप्र/राभा), श्री टी एस शेषाद्री भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

अपने भाषण के दौरान कार्यपालक निदेशक श्री ए एस राजीव तथा श्री एम के भट्टाचार्य ने हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए तथा बैंक को प्राप्त "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" के लिए राजभाषा विभाग को बधाई दी। कार्यपालकों ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सभी प्रकार का सहयोग प्रदान करने का वादा किया।

कार्यक्रम में श्री अजय कुमार, मुख्य प्रबंधक(राभा) ने बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन से संबन्धित रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु किए गए प्रयासों, योजनाओं तथा उपलब्धियों का पावर पॉइंट प्रजेंटेशन भी प्रस्तुत किया। कार्यपालकों ने उपस्थित स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए सरल हिन्दी के उपयोग पर बल दिया और हिन्दी की सरलता एवं सहजता की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया। कार्यक्रम के अंत में हिन्दी माह – 2018 के दौरान आयोजित हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को कार्यपालक निदेशकगणों तथा महाप्रबंधकों द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए।

इंडियन बैंक को वर्ष 2017-18 में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए भारत सरकार द्वारा “राजभाषा कीर्ति” पुरस्कार से नवाजा गया है। यह पुरस्कार भारत के उपराष्ट्रपति माननीय श्री एम वेंकय्या नायडू के कर-कमलों से बैंक के कार्यपालक निदेशक, श्री ए एस राजीव को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2018 को प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक
तमिलनाडु, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

नाबार्ड

हिंदी पखवाड़ा का आयोजन

नाबार्ड, तमिलनाडु क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै में हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 04 सितम्बर 2018 से 18 सितम्बर 2018 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस दौरान सभी वर्ग के स्टाफ सदस्यों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 18 सितम्बर 2018 को समापन समारोह की अध्यक्षता तमिलनाडु क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य महाप्रबंधक, श्रीमती पद्मा रघुनाथन ने की। अपने स्वागत उद्बोधन में उन्होंने कार्यालय के कामों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने हेतु अधिकाधिक पत्राचार एवं टिप्पणियां हिंदी में करने का आग्रह किया। तत्पश्चात माननीय गृहमंत्री महोदय, माननीय वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री महोदय एवं नाबार्ड अध्यक्ष महोदय के संदेश पढ़े गए। इस शुभ अवसर पर हिन्दी शिक्षण योजना, भारत सरकार से अतिथि वक्ता के रुप में डॉ. सुनिल कुमार लोका, सहायक निदेशक, उपस्थित थे। उन्होंने सभा को सम्बोधित करते हुए “ राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु भारत सरकार् की विभिन्न योजनाओं " पर अपने विचार व्यक्त किए, तदन्तर मुख्य महाप्रबंधक के कर कमलों से विजेताओं को आकर्षक पुरस्कार वितरित किए गए।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, चेन्नै द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस

दिनांक 14/09/2018 को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में श्रीमती आशा राजीव, उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, चेन्नै की अध्यक्षता में यूको बैंक भवन के सभागार में एक सभा का आयोजन किया गया था।

उप महाप्रबंधक महोदया ने सभी उपस्थितजनों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए कहा कि बैंकिंग एक अखिल भारतीय सेवा होने के कारण, सभी स्टॉफ सदस्यों के लिए प्रांतीय भाषाओं के साथ साथ राजभाषा हिंदी की जानकारी भी अति आवश्यक है। आज समग्र भारतवर्ष को हिन्दी ही जोड़ रही है। हिन्दी दिवस मनाने की मूल भावना को ध्यान में रखते हुए आइए, आज हम दृढ़ संकल्प लें कि हम वैयक्तिक तौर पर अपने कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे।

श्री के. रमेश, सहायक महाप्रबंधक एवं उप अंचल प्रमुख ने अपने अभिभाषण में कहा कि हिन्दी ही हमारी राजभाषा बनने में प्रमुख कारण इसकी सरलता ही है। उन्होंने सभी अधिकारियों से भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु अनुरोध किया।

श्री वी. राधाकृष्णन, सहायक महाप्रबंधक ने हिंदी की महत्ता का वर्णन करते हुए, अपने प्रारम्भिक परिवीक्षाकालीन सेवा के दौरान लखनऊ में पदस्थापन समय का अत्यंत ही हृदयस्पर्शी अनुभव सभी से साझा किया। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय गृह मंत्री, वित्त मंत्री एवं हमारे बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी महोदय का सन्देश वाचन भी किया गया।

इस दौरान सभी स्टॉफ सदस्यों के लिए एक राजभाषा प्रश्नोत्तरी एवं अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था जिसमें कार्यपालकों सहित सभी स्टॉफ सदस्यों ने बढ-चढ कर हिस्सा लिया । प्रतियोगिता में सुश्री बी. विशाखा, सहायक प्रबन्धक (प्रथम), श्री टुकुना सेठी, प्रबंधक (द्वितीय), श्री ज्ञानेंद्रदीप शाह, प्रबन्धक, (तृतीय) एवं श्री सी. रामकृष्ण राजा, वरिष्ठ प्रबंधक को प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ। सफल प्रतिभागियों को अंचल प्रमुख श्रीमती आशा राजीव ने पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम का सफल संचालन अंचल कार्यालय के मुख्य प्रबंधक(राजभाषा) श्री पंचानन साहु ने किया।

चेन्नै नराकास (बैंक व वि.सं.) के तत्ववधान में भारतीय रिज़र्व बैंक, चेन्नै कार्यालय द्वारा "बैंकिंग और आईटी" विषय पर हिंदी में सेमिनार आयोजन

भारतीय रिज़र्व बैंक, चेन्नै कार्यालय द्वारा 06 जून 2018 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में सदस्य बैंकों के राजभाषा अधिकारियों के लिए "बैंकिंग और आईटी" विषय पर हिंदी में सेमिनार आयोजन किया गया। विभिन्न बैंको के 32 राजभाषा अधिकारियों ने सेमिनार में भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री किशोर खरात,अध्यक्ष,नराकास/ प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, इंडियन बैंक द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर डॉ के बालु, मुख्य महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक,चेन्नै ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

सेमिनार के प्रतिभागियों का ग्रुप फोटो

ओरियंटल बैंक ऑफ कॉमर्स , मण्डल कार्यालय, चेन्नै द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाडा

मुख्य कार्यालय का पत्र दिनांक 14 अगस्त, 2018 तथा मण्डल कार्यालय का परिपत्र दिनांक 29.08.2018 के अनुसार दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक "हिन्दी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 10.00 बजे दिनांक 01.09.2018 को द्वीप प्रज्व्वलन से किया गया। श्री पी. श्रीधर, फील्ड महाप्रबंधक (वसूली), दक्षिण भारत चेन्नई और श्रीमती भुवनेश्वरी वेंकटरामन, उप महाप्रबंधक के कर कमलों से "हिन्दी पखवाड़ा- 2018" का उद्घाटन किया गया।

श्री पी.श्रीधर महाप्रबंधक जी ने "हिन्दी भाषा" के महत्व व विशेषताओं को बताते हुए सभी कर्मचारियों को सरल व मिश्रित भाषा में एक दूसरे से बातचीत करने की सलाह दी। महाप्रबंधक महोदय ने एम.एस.एम.ई विभाग की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस विभाग के सारे कर्मचारी हिन्दी में बातचीत करते है, अन्य सभी विभाग के स्टाफ भी इसी प्रकार हिन्दी भाषा सीखें और बोलने का प्रयास करें।

हिन्दी भाषा के क्षेत्र में हमें और अधिक प्रगति करनी है और हिन्दी प्रयोग को आगे बढ़ाना है। हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जा रही गतिविधियों में भाग लेने हेतु कर्मचारियों को प्रेरित किया। समापन समारोह में सभी कर्मचारियों, प्रबंधकों व विजेताओं को शामिल करने की सलाह दी। उप महाप्रबंधक, मण्डल कार्यालय ने कार्यालय के अत्यधिक बैंकिंग कार्य हिन्दी में करने के लिए निर्देश दिया।

हिन्दी अधिकारी ने राजभाषा अधिनियम, नियम, नीतिगत आदेशों तथा प्रोत्साहन योजनाएं की जानकारी दी। सभी कर्मचारियों से हिन्दी पखवाड़े के दौरान अत्याधिक पत्राचार, नोटिंग ई-मेल एवं आंतरिक कामकाज हिन्दी में करने के लिए आग्रह किया।

मुख्य कार्यालय के प्रारुप के अनुसार हिन्दी पखवाड़ा का बैनर कार्यालय के परिसर में लगाया गया।

स्थानीय शाखा/ क्लस्टर कार्यालयों तथा ओपेक को शामिल करते हुए तीन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। । राजभाषा अधिकारी ने सभी शाखाओं के कर्मचारियों को प्रतियोगिता में भाग लेने के लिये प्रोत्साहित किया। सभी शाखा प्रबंधकों से निवेदन किया गया कि वे अपने शाखा से अवश्य नामांकन भेजे।

बोलती तस्वीर हिन्दी प्रतियोगिता : दिनांक 05.09.2018 को शाखा कार्यालय माउंट रोड द्वारा "बोलती तस्वीर प्रतियोगिता" आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में कुल 19 प्रतिभागी थे। तीन विजेता पुरस्कार दिए गए और दो सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

चित्र कहानी लेखन प्रतियोगिता : यह प्रतियोगिता दिनांक 07.09.2018 को मण्डल कार्यालय में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में 09 कर्मचारियों ने भाग लिया था। तीन विजेता पुरस्कार दिए गए।

प्रश्न मंच प्रतियोगिता : ओपेक, चेन्नै द्वारा दिनांक 10.09.2018 को "प्रश्न मंच प्रतियोगिता" आयोजित की गई। श्री संतोष शिवराज, प्रबंधक (विपणन) क्विज़ मास्टर थे। यह प्रतियोगिता बहुत ही व्यवस्थित ढंग से आयोजित की गई थी। प्रतियोगिता में 20 कर्मचारियों ने भाग लिया था | सभी प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। दो कर्मचारियों का एक टीम बनाया गया। तीन विजेता पुरस्कार दिए गए और दो सांत्वना पुरस्कार दिए गए।

प्रतियोगिताओं में शाखा कार्यालयों, क्लस्टर कार्यालय तथा ओपेक से कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री नंद किशोर बर्नवाल, मुख्य प्रबंधक, ओपेक, चेन्नै ने सभी विजेताओं को बधाई दी और उन्हें पुस्तक भेंट की।

हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री मुकेश कुमार जैन जी का हिन्दी दिवस संदेश प्रस्तुत किया गया। कु. सिंधुजा संथानम, वरिष्ठ प्रबंधक ने वित्त एवं कार्पोरेट कार्य मंत्री श्री अरुण जेटली जी, का हिन्दी दिवस संदेश पढ़ कर सुनाया। सभा को गृह मंत्री, श्री राजनाथ सिहं जी का हिन्दी दिवस संदेश भी पढ़ कर सुनाया गया।

स्टाफ सदस्यों को यहीं सीमित न रहकर पूरे वर्ष अधिक से अधिक काम हिन्दी में करने के लिये प्रेरित किया गया। पुरस्कारों का वितरण दिनांक 15.09.2018 को आयोजित सभा में अध्यक्ष महोदया श्रीमती भुवनेश्वरी वेंकटरामन, उप महाप्रबंधक के कर कमलों से किया गया। सभी विजेताओ को हार्दिक बधाई दी गई।

सदस्य सचिव ने अंत में सभी कर्मचारियों व प्रबंधकों को धन्यवाद दिया। राष्ट्रगान के साथ "हिन्दी पखवाडा-2018" का समापन हुआ।

कंठस्थ

ट्रांसलेशन मेमोरी (टी.एम.) मशीन-साधित अनुवाद प्रणाली का एक भाग है जिससे अनुवाद की प्रक्रिया में सहायता मिलती है। ट्रांसलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत भाषा (Source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में उन वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है। ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित इस सिस्टम की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में किए गए अनुवाद को किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुनः-प्रयोग कर सकता है। यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है।

ट्रांसलेशन मेमोरी डेटाबेस बनाने के लिए स्रोत भाषा के वाक्यों एवं लक्षित भाषा में उनके अनुवादित वाक्यों का विश्लेषण किया जाता है। अनुवाद के लिए सिस्टम का निरंतर प्रयोग करते रहने से टी.एम. का डेटाबेस उतरोत्तर बढ़ता रहता है।

टी.एम. का डेटाबेस दो प्रकार का होता है : ग्लोबल ट्रांसलेशन मेमोरी (जी.टी.एम.) तथा लोकल ट्रांसलेशन मेमोरी (एल.टी.एम.)। एल.टी.एम. प्रत्येक अनुवादक के कम्प्यूटर पर अलग-अलग होती है, जबकि जी.टी.एम. एक सामूहिक डेटाबेस है जोकि राजभाषा विभाग के सर्वर पर उपलब्ध है। परीक्षण के पश्चात् विभिन्न एल.टी.एम. जी.टी.एम. का भाग बन जाती हैं।

ट्रांसलेशन मेमोरी पर आधारित यह सिस्टम भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग के लिए विकसित किया गया है। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है।

सिस्टम की मुख्य विशेषताएं:

- लोकल एवं ग्लोबल टी.एम. बनाना
- अनुवाद के लिए टी.एम. से पूर्ण मिलान
- अनुवाद के लिए टी.एम. से आंशिक मिलान
- पैकेज बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- एक समय-विशेष में बनाए गए पैकेज, प्रोजेक्ट तथा अनुवाद की गई फाइलों की रिपोर्टशब्दकोश संयोजन एवं वाक्यांश खोज, फाइल फॉर्मेट को यथावत रखना
- वर्क-फ्लो संयोजन
- प्रोजेक्ट बनाने/अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- फाइल को अन्य कम्प्यूटर से प्राप्त करने/अन्य कम्प्यूटर पर भेजने की सुविधा
- अनुवादित फाइल का विश्लेषण - अनुवादित फाइलों की संख्या, पूर्ण एवं आंशिक रूप से मिले हुए वाक्यों की संख्या, प्राप्त/अप्राप्त शब्द इत्यादि की रिपोर्ट द्विभाषिक फाइल को डाउनलोड एवं अपलोड करना
- विभिन्न फाइल एक्सटेंशन को समर्थन
- गुणवत्ता निर्धारक मानदंड

श्रोत
राजभाषा विभाग
भारत सरकार

पंजाब नैशनल बैंक, अंचल कार्यालय, चेन्नै द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस एवं अन्य गतिविधियां

राजभाषा समारोह

हिन्दी दिवस 2018 के अवसर पर राजभाषा कार्यान्वयन के प्रचार-प्रसार एवं स्टाफ सदस्यों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अंचल कार्यालय एवं इसके अधीन स्टाफ सदस्यों के लिए "हिन्दी संदेश" प्रेषित किया गया।

अंचल कार्यालय, चेन्नै के सभागार में दिनांक 26 सितम्बर 2018 को श्री पी चंद्र कुमार, उप अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में "हिंदी दिवस" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री अजय कुमार, सदस्य-सचिव, नराकास (बैंक व वित्तीय संस्थान) एवं श्री एम एम थॉमस, मंडल प्रमुख, मंडल कार्यालय, चेन्नै विशेष रूप से उपस्थित थे । अंचल कार्यालय, चेन्नै में पदस्थ श्री ललित कुमार, प्रबंधक द्वारा स्व-रचित कविता संग्रह "तुमसे दूर चला आया- कुछ यादों के संग" पुस्तक का विमोचन किया गया, साथ ही, हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले स्टाफ सदस्यों, शाखाओं एवं विभागों को पुरस्कृत किया गया।

सबसे दाएँ- श्री पी सी कुमार, उप अंचल प्रबंधक, दाएँ से द्वितीय- श्री अजय कुमार, सदस्य-सचिव, नराकास (बैंक व वित्तीय संस्थान), चेन्नै बाएँ से द्वितीय- श्री एम एम थॉमस, मंडल प्रमुख, मंडल का., चेन्नै एवं सबसे बाएँ- श्री ललित कुमार, प्रबंधक ।

सबसे बाएँ - श्री सुधीर कुमार रात्रा, सहायक महाप्रबंधक, अंचल का., चेन्नै एवं साथ में केंद्रीय विद्यालय- अड्यार के प्रधानाचार्य ।

सतर्कता जागरूकता अवसर पर राजभाषा गतिविधियां

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2018 के अवसर पर केंद्रीय विद्यालय, अड्यार में दिनांक 03 नवंबर, 2018 को श्री सुधीर कुमार रात्रा, सहायक महाप्रबंधक, अंचल कार्यालय, चेन्नई की अध्यक्षता में विद्यार्थियों के लिए "हिंदी भाषण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय विद्यालय, अड्यार के प्राधानाचार्य विशेष रूप से उपस्थित थे । हिंदी भाषण प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी), चेन्नै, द्वारा संयुक्त हिन्दी दिवस/पखवाड़ा का आयोजन

भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, चेन्नै कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2018 को संयुक्त हिन्दी दिवस एवं पखवाड़ा का शुभारंभ महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख श्रीमती चित्रा आलै के कर कमलों से किया गया। अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी संपर्क भाषा है जिसके माध्यम से आम जनता अपने विचारों का अदान-प्रदान करती है और यही नहीं, आज बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ भी हिन्दी के माध्यम से अपना व्यवसाय को बढ़ावा दे रही हैं, चूकिं हमारा बैंक भी व्यवसाय सेवा क्षेत्र से जुड़ा है, जिसके प्रचार-प्रसार में भाषा का महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमें अपने उत्पादों को ग्राहकों तक उन्हीं की भाषा में पहुंचाने का प्रयास करना होगा तभी हम अपने लक्ष्य को हासिल कर सकेंगे। उन्होंने इस शुभ अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सभी स्टाफ-सदस्यों से अनुरोध किया कि वे अपना अधिक से अधिक कार्य मूल रूप से हिन्दी में करें और विश्वास व्यक्त किया कि सभी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

इस अवसर पर हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में माननीय गृह मंत्री एवं वित्त मंत्री से प्राप्त संदेश अधिकारियों द्वारा पढ़कर सुनाया गया। हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 27 सितम्बर, 2018 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस पखवाड़े के दौरान स्टाफ-सदस्यों के लिए विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे हिन्दी टिप्पण लेखन, कम्प्यूटर में ऑन लाइन यूनीकोड़ टंकण, स्मारण शक्ति, समाचार, नोटिंग,प्रश्न मंच और सुलेख लेखन आदि का आयोजन किया गया । सभी स्टाफ-सदस्यों ने बड़े उत्साह से सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में लॉयला कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.जी.लोगेश्वर उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री बी.राजेन्द्र कुमार, सहायक महाप्रबंधक (हिन्दी) ने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताएं तथा उसमें सभी स्टाफ-सदस्यों उत्साहपूर्वक भाग लेने पर प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि सरकारी कर्मचारी होने के नाते संवैधानिक जिम्मेदारी ही नहीं, अपितु हमारा यह नैतिक कर्तव्य है कि हम राजभाषा हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। उन्होंने स्टाफ-सदस्यों से राजभाषा नीति का पूर्ण अनुपालन करने का आह्वान किया। इस अवसर पर महाप्रबंधक श्रीमती चित्रा आलै ने भी अपने विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा है, आप सभी बैंक के कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करने का हरसंभव प्रयास करें, ताकि देश के अधिकाधिक लोगों तक हमारे बैंक की पहुँच का विस्तार हो और हम हिन्दी-प्रयोग के राष्ट्रीय एवं सामाजिक दायित्व का निर्वाह करते हुए अपने व्यवसाय में वृद्धि कर सके। बैंक के परिचालनों के हर पहलू में हम अग्रणी हो रहे हैं। हिन्दी भाषा के प्रयोग में भी हमें अग्रणी होना चाहिए।

मुख्य अतिथि डॉ.जी.लोगेश्वर ने अपने उद्बोधन कहा कि भाषा वहीं सशक्त होती है जिसमें अपनी विपुल शब्द सम्पदा हो तथा जो अन्य भाषाओं के शब्द आत्मसात कर उन्हें अपना रूप देने में क्षमता रखती हैं, इसलिए वैश्वीकरण के फलस्वरूप हिन्दी के समक्ष आने वाले चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने में हिन्दी पूर्णता सशक्त है और हिंदी के पास भाषिक क्षमता इतनी ज्यादा है कि वह आसानी से विश्वभाषा बन सकती है।

आज हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएं भी साथ - साथ उसी गति से आगे बढ़ रही है तथा व्यवसाय, वाणिज्य, व्यापार तथा विज्ञापन के क्षेत्र में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएं सशक्त भाषा के रूप में उभर रही है।

अंत में पखवाडे के दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि के कर कमलों से पुरस्कार वितरित किए गए। श्री बी.राजेन्द्र कुमार, सहायक महाप्रबंधक (हिन्दी) ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्रीमती नंदिनी शेषाद्री द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात उक्त कार्यक्रम का समापन हुआ।

ईमेल में अक्सर प्रयोग किए जाने वाले वाक्य

क्रम सं	वाक्य	
1.	हम आपके पिछले/अनुगामी मेल का संदर्भ लेते हैं।	We refer to your trail e-mail.
2.	कृपया संलग्नक प्राप्त करें।	Please find the attachment.
3.	हमारा जवाब संलग्न है।	Our reply is enclosed.
4.	हमारी शाखा/ कार्यालय से संबन्धित विवरण संलग्न है।	Statement pertaining to our branch/Office is enclosed.
5.	हम उक्त विषय का संदर्भ लेते हैं।	We refer to the above subject matter.
6.	कृपया पिछले मेल का संदर्भ लें। कृपया अपना जवाब शीघ्र दें।	Please refer to the trail mail. Kindly send your reply soon.
7.	हम शीघ्र ही उत्तर देंगे/हम अपेक्षित जानकारी शीघ्र देंगे।	We shall send our reply/revert back shortly Or we shall send the required information shortly.
8.	अपेक्षानुसार सूची संलग्न है।	As required list is enclosed.
9.	कृपया स्थिति से अवगत कराते रहें।	Kindly keep us posted with the development.
10.	स्पष्टीकरण मांगा जाय।	Explanation may be called for.
11.	उत्तर शीघ्र भेजिये।	Please expedite reply.
12.	हमें मामले पर आगे कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है।	We need not pursue the matter further.
13.	पत्र की विषयवस्तु स्वतः स्पष्ट है।	Contents of the letter are the self explanatory.
14.	उत्तर विलंब से भेजने के लिए खेद है।	We regret the delay in submitting the reply.
15.	हम निम्नलिखित दस्तावेज़ भेज रहे हैं। कृपया प्राप्ति सूचना दें।	We despatch the following documents. Kindly acknowledge.

बृजनन्द विश्वकर्मा
राजभाषा अधिकारी, बैंक ऑफ़ इंडिया

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक, राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय, चेन्नै द्वारा आयोजित राजभाषा सम्बंधी कार्यक्रम एवं अन्य गतिविधियाँ

हिंदी दिवस समारोह 2018

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक , केंद्रीय कार्यालय , चेन्नै द्वारा 31.08.2018 से 14.09.2018 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस अवधि के दौरान कार्यपालकों सहित सभी प्रवर्ग के स्टाफ सदस्यों हेतु कुल 11 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें सभी ने बढ़- चढ़ कर हिस्सा लिया । इस दौरान बैंकिंग विषय पर प्रतियोगिताओं के अलावा हिंदी फिल्मी गीत जैसे मनोरंजक विषय को भी प्रतियोगिता में शामिल किया गया। वरिष्ठ कार्यपालकों (महा प्रबंधकों / उप महा प्रबंधकों/ सहायक महा प्रबंधकों) हेतु अलग से हिंदी नोटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गयीं । इसके अलावा बैंक के स्टाफ सदस्यों हेतु अखिल भारतीय हिंदी निबंध प्रतियोगिता और सभी बैंकों हेतु अंतर बैंक हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें क्रमशः 16 व 19 प्रतिभागियों को पुरस्कार प्राप्त हुए । हिंदी पखवाड़े के दौरान केंद्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों में राजभाषा कार्यांवयन में तत्परता दिखाने वाले विभागों व स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत किया गया।

केंद्रीय कार्यालय में हिंदी दिवस के पुरस्कार वितरण का आयोजन काफी व्यापक व भव्य स्तर पर किया गया । इस समारोह में बैंक के एमडी व सीईओ महोदय के अलावा बैंक का समूचा उच्च प्रबंधन उपस्थित था । समारोह की अध्यक्षता करते हुए एमडी व सीईओ ने इस बात पर बल दिया कि हिंदी कार्यांवयन को डेस्क तक सीमित ना रखकर ग्राहकों तक भी पहुँचायें । इस संदर्भ में उनका कहना था कि डिजिटल बैंकिंग में हिंदी का समावेश करने से वह स्वयं ग्राहकों तक पहुँच जायेगी। बैंक की जितनी सेवाएँ , योजनाएँ व उत्पाद उपलब्ध है , यदि उनकी मार्केटिंग स्थानीय भाषा के साथ- साथ हिंदी में भी की जाए तो हमारी सेवाओं और उत्पादों का दायरा बढ़ जाएगा और इन्हें नित नवीन ग्राहक मिलेंगे । हिंदी को सिर्फ कार्यान्वयन तक सीमित ना रखकर इसे प्रचार-प्रसार का माध्यम भी बनाया जाए । हिंदी एक सशक्त माध्यम के रूप में कार्य करेगी इसमें कोई संदेह नहीं है । हमें हिंदी कार्यांवयन इसलिए नहीं करना है कि यह सरकारी प्रावधान है बल्कि इसलिए करना है क्योंकि यह वक्त का तकाज़ा है। बैंक को आगे बढ़ाने व लाभ दिलवाने में हिंदी अनन्य भूमिका निभा सकती है ।

एमडी व सीईओ महोदय से पुरस्कार प्राप्त करते महा प्रबंधक श्री के जीवानंदम

वाणी को प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के साथ एमडी व सीईओ महोदय, कार्यपालक गण व राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य

दोनो कार्यपालक निदेशक महोदयों ने भी इस अवसर पर उपस्थित जनों को संबोधित किया और हिंदी की महत्ता का उल्लेख करते हुए यह बताया कि हिंदी का कार्य किसी एकल व्यक्ति का कार्य नहीं है बल्कि यह पूरी टीम का कार्य है। हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए हमें टीम भावना से आगे बढ़ना होगा।

तदुपरांत सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गये। कार्यपालकों को पुरस्कार प्रदान करते समय एमडी महोदय ने इस बात की खुशी जाहिर की कि इन प्रतियोगिताओं में अधीनस्थ स्टाफ से लेकर उच्च कार्यपालकों की प्रतिभागिता से यह सिद्ध होता है कि हम सब में हिंदी के प्रति अपार स्नेह है, जरूरत है इस स्नेह रूपी भावना को कार्यांवयन के प्रति कोशिशों में ढालने की।

पुरस्कार वितरण समारोह के बाद हिंदी गायन प्रतियोगिता में पुरस्कार जीतने वाले सभी प्रतिभागियों ने गीत गाकर अपनी गायन प्रतिभा को उजागर किया। कार्यक्रम का समापन उप महा प्रबंधक कैप्टन एमपी सिवन के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

भारत सरकार से वाणी को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार प्राप्त हुआ, पुरस्कार ग्रहण करते हुए एमडी व सीईओ महोदय श्री आर सुब्रमण्यकुमार

"अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में लेखमाला IV का विमोचन करते हुए कार्यपालक निदेशक महोदय, महा प्रबंधक महोदय, सहायक महा प्रबंधक महोदय और राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय के स्टाफ सदस्य"

इंडियन बैंक द्वारा भोपाल में "राजभाषा हिन्दी का सरलीकरण" विषय पर दिनांक 22.02.2019 को आयोजित अखिल भारतीय हिन्दी सेमिनार

इंडियन बैंक द्वारा 22 फरवरी 2019 को अखिल भारतीय हिंदी सेमिनार का आयोजन भोपाल स्थित होटल कोर्टयार्ड मैरियट में किया गया। सेमिनार की अध्यक्षता श्री टी.एस. शेषाद्री, महाप्रबंधक (मासंप्र / राभा), इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै ने की। इस अवसर पर, श्री हरीश सिंह चौहान, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, श्री विनायक वी. टेम्भुर्ने, अंचल प्रमुख, यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, भोपाल अंचल, श्री संजय लाडे, उप महाप्रबंधक / अंचल प्रबन्धक, इंडियन बैंक, भोपाल अंचल, विभिन्न बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं के अधिकारीगण और विभिन्न बैंकों तथा केंद्र सरकार के कार्यालयों के राजभाषा विभाग के प्रमुख एवं नराकास, भोपाल के सदस्य-सचिव की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम से पूर्व, पुलवामा हमले के शहीदों के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। तत्पश्चात, मंचासीन अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित किया। शुरुआत में, श्री संजय लाडे, उप महाप्रबंधक / अंचल प्रबन्धक, इंडियन बैंक, भोपाल अंचल ने स्वागत भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सभी का स्वागत किया और सबकी शानदार उपस्थिति के लिए धन्यवाद दिया।

श्री विनायक वी. टेम्भुर्ने, अंचल प्रमुख, यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, भोपाल अंचल ने सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में, उन्होंने इस भव्य आयोजन के लिए इंडियन बैंक को बधाई दी और राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में इंडियन बैंक द्वारा किए गए कार्यों की सराहना की। सभा को संबोधित करते हुए, उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा भारत में अधिकतम लोगों द्वारा बोली जाती है, उन्होंने भाषा को सरल और आसान बनाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा में अंतर्राष्ट्रीय भाषा बनने की क्षमता है। उन्होंने इंडियन बैंक द्वारा प्रकाशित 'संवाद चालीसा' पुस्तिका और 'हिंदी वायरो डेस्क कैलेंडर 2019' की विशेष रूप से सराहना की।

श्री टी.एस. शेषाद्री, महाप्रबंधक (मासंप्र / राभा), इंडियन बैंक ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के सरलीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि सरल भाषा में व्यापार करके हम अधिक लोगों को जोड़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि अन्य भाषाओं के लोकप्रिय शब्दों को हिंदी में समाहित किया जाना चाहिए ताकि राजभाषा को सरल बनाया जा सके। हमारे देश में विभिन्न प्रकार के ग्राहक हैं, कुछ पढ़े-लिखे हैं, कुछ कम पढ़े-लिखे हैं और कुछ ग्राहक अनपढ़ भी हैं। हमें सभी को बैंकिंग सेवाएं देनी होती है। इसलिए, बैंकिंग भाषा को आम आदमी के लिए स्वीकार्य बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बैंक 'प्रेरणा और प्रोत्साहन' द्वारा हिंदी भाषा को बढ़ावा देना चाहता है।

श्री अजयकुमार, मुख्य प्रबंधक (राभा), इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै, ने पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से वर्ष 2018-19 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में इंडियन बैंक द्वारा किए गए प्रयासों और उपलब्धियों पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसे सभी ने सराहा।

श्री हरीश सिंह चौहान, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय ने भारत सरकार के प्रतिनिधि के रूप में सेमिनार में भाग लिया एवं सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में, उन्होंने इंडियन बैंक को उपरोक्त विषय पर सेमिनार आयोजित करने के लिए बधाई दी और कहा कि यह वर्तमान समय के बैंकिंग के लिए प्रासंगिक है। राजभाषा के सरलीकरण पर ध्यान आकर्षित करते हुए, उन्होंने कहा कि साहित्यिक हिंदी में काम करना मुश्किल है, आम आदमी तक पहुंचने के लिए, हमें सरल और आसान शब्दों का उपयोग करने की आवश्यकता है। उन्होंने इंडियन बैंक द्वारा प्रकाशित 'संवाद चालीसा' पुस्तिका की विशेष रूप से सराहना की। तुलसीदास और केशवदास की रचनाओं का हवाला देते हुए उन्होंने भाषा के सरलीकरण के महत्व पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन के दौरान, उन्होंने कहा कि हिंदी को एक अंतरराष्ट्रीय भाषा के

रूप में स्थापित करने के लिए, जाति, धर्म, संस्कृति आदि से ऊपर उठकर "एक राष्ट्र - एक भाषा" नीति को अपनाने की आवश्यकता है। उनके भाषण को सभी ने सराहा।

कार्यक्रम को आकर्षक बनाते हुये, अखिल भारतीय हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को श्री टी.एस. शेषाद्री, महाप्रबंधक (मासंप्र / राभा), इंडियन बैंक और मंचासीन विशिष्ट अतिथियों द्वारा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान कॉर्पोरेट कार्यालय एवं अंचल कार्यालयों द्वारा, कई पुस्तकें / पत्रिकाएं / सहायक-साहित्य का गणमान्य व्यक्तियों द्वारा विमोचन किया गया।

पत्रिकाओं और सहायक-साहित्य के विमोचन के पश्चात, "राजभाषा हिंदी का सरलीकरण" विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता के पुरस्कार विजेताओं द्वारा पावर-पॉइंट प्रस्तुति की गई।

श्री अजयकुमार, मुख्य प्रबंधक (राभा) ने धन्यवाद ज्ञापन किया, जिसमें उन्होंने इंडियन बैंक के महाप्रबंधक (मासंप्र / राभा), श्री हरीश सिंह चौहान, प्रतिनिधि, भारत सरकार, राजभाषा विभाग तथा अन्य गणमान्य अतिथियों को उनकी गरिमामयी उपस्थिति से संगोष्ठी को यादगार बनाने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने श्री संजय लाडे, अंचल प्रबन्धक, इंडियन बैंक, भोपाल अंचल और उनकी टीम को भोपाल में सेमिनार के सफल आयोजन के लिए विशेष धन्यवाद दिया।

राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सुरक्षित व उन्नत साइबर प्रणाली : वर्तमान समय की आवश्यकता !

वर्तमान दौर में तकनीकी के बढ़ने से आज लगभग हर फील्ड में कंप्यूटर और इंटरनेट का इस्तेमाल किया जा रहा है. आज ऐसा समय आ गया है कि इंटरनेट और कंप्यूटर पर हमारी लगातार निर्भरता बढ़ती जा रही है। हालांकि जैसे-जैसे हमारी जिंदगी में इंटरनेट की दखल बढ़ती जा रही है वैसे-वैसे ही साइबर क्राइम की रफ्तार भी बढ़ रही है।

क्या है साइबर क्राइम- इंटरनेट का गलत तरीके से इस्तेमाल करके किसी को नुकसान पहुंचाना या इंटरनेट के माध्यम से होने वाले अपराधों को साइबर क्राइम कहा जाता है। इसके लिए दुनिया के हर देश में साइबर स्पेस का अलग कानून बनाया गया है जिसका मकसद है इंटरनेट के माध्यम से होने वाले हाइटेक अपराधों पर लगाम लगाई जा सके। साइबर क्राइम के अंतर्गत ब्लैकमेंलिंग, स्टॉकिंग, कॉपीराइट, क्रेडिट कार्ड चोरी, फ्रॉड, पोर्नोग्राफी आदि आते है।

साइबर सुरक्षा हमलों के प्रकार

बदलती तकनीकी की वजह से हमारी सुरक्षा और थ्रेट इंटेलिजेंस हमारे लिए काफी चुनौती भरा काम हो गया है। हालांकि साइबर धमकियों से बचने के लिए हमें हमारी जानकारी को सुरक्षित रखना काफी जरूरी है।

- रेनसमवेयर - यह एक तरह का वाइरस होता है जो कि अपराधी द्वारा लोगों के कम्प्युटर और सिस्टमों में हमला करने के लिए काम में आता है। यह कम्प्युटर में पड़ी फाइलो को काफी नुकसान फाइलों है।
- मालवेयर – यह कम्प्युटर की किसी फाइल या फिर प्रोग्राम को नुकसान फाइलों है जैसे की कम्प्युटर वाइरस, वार्म, ट्रोजन आदि।
- सोशल इंजीनियरिंग – यह एक तरीके का हमला है जो की मनुष्य के वार्तालाप पर निर्भर करता है। जिससे कि बड़ी चालाकी से लोगों को जाल में फसाया जा सके और उनसे उनके निजी डाटा, पासवर्ड आदि को निकलवाया जा सके।
- फिशिंग - यह एक तरह की धोखाधड़ी है जिसमें धोखाधड़ी वाले ईमेल लोगों को भेजे जाते हैं जिससे कि उन्हें यह लगे के ये मेल किसी अच्छी संस्था से आया है। इस तरह के मेल का मकसद जरूरी डाटा को चुराना होता है जैसे की क्रेडिट कार्ड की जानकारी या फिर लॉग इन जानकारी।

साइबर सुरक्षा के फायदे

साइबर सुरक्षा इसलिए जरूरी है क्योंकि सरकारी संस्थान, सैन्य संस्थान, कॉर्पोरेट एवं वित्तीय संस्थान मेडिकल संस्थान आदि विभिन्न तरह के डाटा को इक्कठा करते है और उस डाटा को अपने सिस्टम, कम्प्युटर और अन्य उपकरणों में रखते हैं। इस डाटा का कुछ भाग काफी महत्वपूर्ण भी हो सकता है जिसके चोरी होने से देश, समाज तथा किसी की निजी ज़िंदगी पर काफी गहरा प्रभाव पड़ सकता है।

साइबर सुरक्षा की मदद से डाटा को सुरक्षित रखा जाता है जिससे की डाटा किसी और के हाथ नहीं लग सके। जैसे-जैसे डाटा बढ़ता जाता है वैसे-वैसे हमें अच्छे और प्रभावशाली साइबर सुरक्षा के उत्पादों और प्रणाली की जरूरत पड़ती है।

साइबर सुरक्षा की मदद से हम साइबर हमले, डाटा की चोरी

आदि से बच सकते हैं। जब भी किसी संस्था में किसी अच्छे तरह के नेटवर्क की सुरक्षा होती है और किसी भी तरह की मुश्किल से बचने के तरीके होते हैं, यह सब काम साइबर सुरक्षा के उत्पादों और प्रणाली की मदद से ही मुमकिन हो पाता है। उदाहरण के लिए काफी तरह के एंटीवाइरस आदि हमें वाइरस के हमलों से बचाते हैं।

सरकारी स्तर पर भले ही आज "डिजिटल इंडिया" जैसे कार्यक्रमों की बदौलत इंटरनेट की तथा इससे जुड़े लाभों की चर्चा अधिक हो रही हो, किंतु भारत जैसे देश में भी बड़ी आबादी दशक भर से भी अधिक समय से इस प्रणाली को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाए हुए हैं। बात चाहे ई-मेल के माध्यम से संदेश आदान-प्रदान करने की हो या अपने बिलों के भुगतान की, ऑनलाइन खरीदारी की हो या नौकरियों के लिये आवेदन की, बैंकिंग सुविधाओं का लाभ उठाने की हो अथवा रेलवे या हवाई जहाज़ों के टिकट बुक करने की, सब चीजों में इंटरनेट का इस्तेमाल भारत में लंबे अरसे से हो रहा है। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया व स्मार्ट फोन (विशेषकर कम कीमत वाले) के आने से इस क्षेत्र में एक किस्म की क्रांति सी आ

गयी है।

कहना मुश्किल है कि यदि मात्र एक दिन के लिये भी फेसबुक अथवा व्हाट्सएप की सुविधा बंद कर दी जाए तो अधिक समस्या किस आयु वर्ग के लोगों को पेश आएगी, क्योंकि लगभग सभी आयुवर्ग के लोग सरलता और कुशलता से इसका खासा इस्तेमाल कर रहे हैं। कई मामलों में तो वे बच्चे जिन्होंने बमुश्किल अपनी टीनएज में जीवन में इस हद तक पैठ बना लेने के चलते असली संसार के साथ-साथ एक आभासी संसार ने भी आकार ले लिया है, जिसे इंटरनेट की भाषा में "वर्चुअल वर्ल्ड" की संज्ञा दी गई है।

अपने आरंभिक दौर में विलासिता लगने वाली कोई चीज़ एक अरसे के बाद किसी भी अन्य सामान्य ज़रूरत की भाँति हमारे जीवन की आवश्यकता बन जाती है। ऐसा ही इंटरनेट और अन्य साइबर सुविधाओं के साथ भी है। हालाँकि भारत इस मामले में कुछ हद तक अभी भी संक्रमण काल से गुज़र रहा है, क्योंकि हमारे यहाँ अनेकों सुविधाओं का कुछ प्रतिशत भाग ही डिजिटल हो पाया है तथा एक बड़ा तबका आज भी उन कार्यों को करने के लिये परंपरागत (अर्थात् ऑफलाइन) तरीकों का ही इस्तेमाल करता है। इसका एक कारण यह है कि एक बड़े तबके तक कंप्यूटर अथवा इंटरनेट तो छोड़िये, बिजली जैसी आधारभूत चीज़ भी हम अब तक नहीं पहुँचा पाए हैं। खैर, आज नहीं तो कल ऐसा कर देंगे तथा तब यह और भी ज्यादा आवश्यक हो जाएगा कि हमारी साइबर प्रणाली मज़बूत के साथ-साथ सुरक्षित भी हो।

कोई चीज हमारे लिये महत्त्वपूर्ण बन चुकी है, यह जानने के लिये ज़रूरी है कि एक बार उसके बिना जीवन की एक कच्ची सी कल्पना की जाए। यदि हमारी साइबर प्रणाली किसी वजह से काम करना बंद कर दे तो-

- हमारी बैंकिंग व्यवस्था चरमरा जाएगी।
- हमारा शेयर बाज़ार पूरी तरह ठप हो जाएगा।
- हमारी संचार व्यवस्था (मोबाइल, टेलीफोन), प्रसारण व्यवस्था (रेडियो, टीवी, सिनेमा) काम करना बंद कर देगी।
- कंपनियों द्वारा ऑनलाइन ट्रेडिंग संभव नहीं होगी।
- इस पर निर्भर अनुसंधान के हमारे कार्य (विशेषकर अंतरिक्ष अनुसंधान से जुड़े) रुक जाएंगे।

उपरोक्त बिंदुओं से साइबर प्रणाली के दुरूस्त रहने के महत्त्व का एक सामान्य अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है। हालाँकि ये अनुमान साइबर प्रणाली के कार्य करना बंद कर देने से

संबंधित थे, जबकि इसका एक अन्य पहलू है- किसी खराबी या अन्य गड़बड़ी के चलते इसका गलत ढंग से कार्य करने लगना, ऐसा होने पर परिणाम कितने भयानक हो सकते हैं इसका तो अनुमान भी कल्पना से परे लगता है।

साइबर प्रणाली में गड़बड़ी किसी तकनीकी खराबी का परिणाम भी हो सकती है तथा किसी बाहरी हस्तक्षेप का भी, जिसे कंप्यूटर की भाषा में साइबर हमला कहा जाता है।

ईरान के यूरेनियम संवर्द्धन तथा परमाणु कार्यक्रम से जुड़े 5 संगठनों पर वर्ष 2010 (या उससे कुछ पहले) में 'स्टक्सनेट' वायरस से किये हमले का उदाहरण यहाँ लिया जा सकता है जिसने ईरान के सेंट्रीफ्यूज़ को नियंत्रण से बाहर कर उसके परमाणु कार्यक्रम को वर्षों पीछे धकेल दिया था। यहाँ शत्रु देश (संभवतः इज़राइल अथवा संयुक्त राज्य अमेरिका) को न तो कोई सेना भेजनी पड़ी और न ही कोई बम गिराना पड़ा। इसी प्रकार "डुकु" नामक वायरस को ईरान के परमाणु कार्यक्रम की रूपरेखा की नकल करने के लिये बनाया गया था।

अपने समय के प्रमुख रक्षा चिंतकों, जैसे मैकियावेली, ए.टी. माहन तथा डुहेट आदि ने क्रमशः थल, जल तथा गगन से होने वाले आक्रमणों से निपटने की रणनीतियाँ तो गढ़ीं, किंतु इस आभासी संसार में होने वाले युद्ध की तो उन्होंने अपने समय में कल्पना भी नहीं की होगी।

एक नियोजित तरीके से अंजाम दिया गया साइबर हमला बिना आवाज़ किये शत्रु को पस्त करने की ताकत रखता है। इस तरीके से अपनी लेशमात्र की जनहानि के बिना हम शत्रु का एक बड़ा नुकसान करके "हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा का चोखा" वाली कहावत को चरितार्थ कर सकते हैं।

हालिया दिनों में 'वानाक्राई' नामक मालवेयर का हमला काफी चर्चित रहा जो आपके कंप्यूटर की ज़रूरी सूचनाओं को एन्क्रिप्ट कर देता था तथा वापस उन तक पहुँच बनाने के बदले आपसे फिरौती मांगता था (जिसके चलते इसे 'रैनसमवेयर' की श्रेणी में रखा गया)। इस तरह का साइबर हमला व्यापक स्तर पर हानि पहुँचाने की क्षमता रखता है।

ये हमले यदि केवल आर्थिक हानि पहुँचाते हों तो एक दफा इन्हें

सहन भी किया जा सकता है, किंतु आजकल साइबर जासूसी की अवधारणा ने लोगों की निजता और देशों की राष्ट्रीय सुरक्षा तक को खतरे में डाल दिया है। वर्ष 2006 से जारी "ऑपरेशन शेडी रैट" तथा भारत को लक्षित किया गया तथा वर्ष 2009 में पकड़ में आया 'घोस्टनेट' का हमला जिसने भारतीय सुरक्षा अभिकरणों की सूचनाओं तक पहुँच बना ली थी आदि इस श्रेणी में आते हैं।

साइबर संसार की चुनौतियों में एक और चुनौती सोशल मीडिया साइटों के बाद से पैदा हुई है, वह है झूठी अथवा तेज़ी से माहौल बिगाड़ने में सक्षम संवेदनशील खबरों का शीघ्रता से प्रसार। कितनी ही बार सोशल मीडिया पर वायरल हुई इन संवेदनशील खबरों के चलते देश का सांप्रदायिक माहौल बिगड़ने का खतरा पैदा हो चुका है। 2012 में ऐसी ही कुछ खबरों के चलते बंगलूरू में रह रहे पूर्वोत्तर भारत के लोगों का बड़ी संख्या में वहाँ से पलायन हुआ था।

अब बात करते हैं इन चुनौतियों से निपटने की जिसके लिये हमें साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की ज़रूरत होगी। यहाँ भी हालात कुछ संतोषजनक दिखाई नहीं देते। विश्व में भले ही भारत को एक आईटी सुपरपावर के तौर पर देखा जाता हो किन्तु हाल ही में एक राष्ट्रीय समाचार-पत्र में छपी एक खबर के मुताबिक भारत आज भी साइबर सुरक्षा विशेषज्ञों की कमी से जूझ रहा है।

हमें समझना होगा कि जिस प्रकार हम अपने रक्षा बजट में किसी प्रकार की कोई कसर नहीं छोड़ते, उसी प्रकार सुरक्षा के

लिहाज़ से इसे भी एक ऐसा मोर्चा मानना होगा जिसे अनदेखा छोड़ने के परिणाम घातक हो सकते हैं।

इस मोर्चे पर वीरता के स्थान पर तकनीक की समझ हमें बचाएगी और हमें इस तकनीकी समझ वाले लोगों की एक फौज उसी से तरह तैयार करने की ज़रूरत है जैसे चीन, अमेरिका अथवा रूस जैसे देशों ने तैयार की है, तभी हम चहुँओर से अपने सुरक्षित होने का दावा कर सकेंगे। हालाँकि ऐसा भी नहीं है कि भारत ने इस चुनौती को पूर्णतया अनदेखा छोड़ दिया हो।

वर्ष 2004 में ही हमने साइबर सुरक्षा संबंधी चुनौतियों से निपटने के लिये "इंडियन कंप्यूटर एमरजेंसी रिस्पॉन्स टीम" (जिसे प्रचलित रूप से आईआरटी-इन के नाम से जाना जाता है) नाम के एक समर्पित अभिकरण का गठन कर लिया था जो समय-समय पर साइबर सुरक्षा से जुड़े विभिन्न उपायों को लागू करता रहता है। ऐसी ही एक पहल इस संस्था ने इस साल फरवरी में 'साइबर स्वच्छता केंद्र' की शुरुआत करके की। 'साइबर स्वच्छता केंद्र' का कार्य डेस्कटॉप और मोबाइल के लिये सिक्योरिटी सॉल्यूशन प्रदान करना है। इस संस्था व अन्य अभिकरणों के संयुक्त प्रयासों का ही फल था कि हाल में हुए 'वनाक्राई' नामक मालवेयर के हमले का भारत पर ज्यादा असर नहीं हुआ।

इसके अलावा, एक श्रेणी एथिकल हैकर्स की भी है जो अपने तकनीकी ज्ञान व प्रतिभा का इस्तेमाल ऐसे हमलों को नाकाम करने में करते हैं। हालाँकि, ऐसे एथिकल हैकर्स की पहचान करना मुश्किल है किंतु भारत में इनकी एक मज़बूत उपस्थिति अवश्य है। अन्य सजग देशों की भाँति भारत को भी संभावित साइबर हमलों व इनसे जुड़ी अन्य गड़बड़ियों से निपटने के लिये और अधिक संस्थागत प्रयासों की ज़रूरत है तभी हम भरोसे के साथ डिजिटलीकरण के लाभों को व्यापक जनसमूह तक पहुँचा पाएंगे।

चन्दन कुमार शर्मा
सहायक प्रबंधक (राभा)
इंडियन बैंक
कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

किसका सच ?

सबका अपना-अपना
एक सच होता है
जो हमें लगता है झूठ
वह किसी का सच है
हो सकता है हमारा सच
दूसरों को झूठ नजर आता हो
सच और झूठ की पहेली
आसानी से नहीं सुलझती
कभी-कभी तो लग जाती है
पूरी की पूरी जिंदगी।

पर क्या जरूरी है
सच-झूठ की पहेली को सुलझाना
क्यों न हम अपने-अपने
सच को संभालें
दूसरे के सच की
चिंता तुम मत करो
दूसरे के सच को
अपने सच की
रोशनी में मत देखो।

मत करो शक
दूसरे के सच पर
जिसे तुम झूठ समझते हो
वही तो किसी का सच है
मत पड़ो इस झमेले में
सच और झूठ के
यदि कुछ करना ही है
तो सिर्फ इतना करो
कि संभालो
सिर्फ और सिर्फ
अपने सच को।

श्याम सुंदर
प्रबंधक(राजभाषा)
भारतीय रिज़र्व बैंक, चेन्नै

महिलाओं की बदलती हुई स्थिति

इस पृथ्वी पर मनुष्य का इतिहास हजारों वर्षों का है इस हजारों वर्षों के इतिहास में मनुष्यों ने विकास क्रम के सिद्धांत का पालन करते हुए इस पृथ्वी पर कई परिवर्तन किए और नित्य नवीन अविष्कारों को जन्म दिया। इस विकास क्रम की यात्रा में इस पृथ्वी पर कई युग बीत गए। हमारी पृथ्वी पर असंख्य प्रजातियों का निवास है। इन असंख्य प्रजातियों में मनुष्य सबसे बुद्धिमान और विकसित प्रजाति मानी जाती है। पृथ्वी पर फैले विभिन्न धर्मों एवं उनके धार्मिक ग्रंथों यथा गीता, बाइबल, कुरान आदि को आधार रूप में लिया जाए तो यह कहा जा सकता है कि इस पृथ्वी पर मनुष्य की यात्रा कई युगों की रही है । हमने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में विकास तो कर लिया परंतु इन हजारों वर्षो से विकासरत हर युग में नारियों पर हमेशा से ही अत्याचार किया गया। विश्व के हर देश में किसी न किसी रूप में स्त्रियों का दमन एवं शोषण किया गया। यदि भारतीय परिपेक्ष्य में देखा जाए तो नारी को कभी श्रद्धा के साथ पूजा गया तो कभी दासता के बंधन में जकड़कर पशुवत व्यवहार किया गया। नारियों की स्थितियों में हमेशा परिवर्तन होता रहा है।

प्राचीन काल के भारत में महिलाओं का बहुत सम्मान किया जाता था। परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया महिलाओं की स्थिति में भीषण बदलाव आया। मध्यकालीन युग के मुकाबले पौराणिक युग में महिलाओं की सामाजिक स्थिति बेहतर थी। मनुस्मृति में नारी को गुरुतर मानते हुए यहाँ तक घोषित किया गया है - "यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।" अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। पारम्परिक विचारधारा में प्राचीन काल से ही स्त्री की पत्नी और माता की भूमिका में प्रशंसा तो की गयी है, किन्तु मानवीय रूप से उसे सदैव से ही बहुत हेय समझा गया है । नारियों को पुरुष का पुछल्ला मात्र मानकर उनके साथ सामाजिक उत्पीड़न किया जाता रहा है।

वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति काफी अच्छी थी। उन्हें शिक्षा का अधिकार था। समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त था। वे कई तरह की सामाजिक अनुष्ठानों में भाग ले सकती थी। उन्हें सामाजिक, बौद्धिक एवं नैतिक रूप से पुरुषों के समान माना जाता था। उन्हें अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार था। परंतु वैदिक काल में भी स्त्रियों को हेय की दृष्टि से देखा जाता था। ऋग्वेद, मैत्रयी संहिता में इसके स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं जिसमें नारी को झूठ का अवतार तथा भेड़िया की संज्ञा दी गई। उत्तर वैदिक युग में नारी की दशा में और गिरावट आई। उत्तर वैदिक युग पुरुष प्रधान समाज था। इसी युग में पुरुष तत्वों की प्रधानता बढ़ती गई। इस युग में स्त्रियों को समान्यतः निम्न दर्जा दिया जाने लगा । महिलाओं की शिक्षा को सीमित करना, बाल विवाह जैसी कई कुरीतियों ने इस युग में जन्म ले लिया था। मध्यकाल आते – आते स्त्री जाति की दशा और भी दयनीय हो गई । महिलाओं की स्थिति के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह निसंदेह रूप से कहा जा सकता है कि मध्यकाल स्त्रियों के लिए कालायुग या अंधकार युग था । मेटसन ने हिन्दू संस्कृति में स्त्रियों की दयनीय स्थिति के लिए हिन्दू धर्म, जाति व्यवस्था, संयुक्त परिवार, इस्लामी शासन तथा ब्रिटिश उपनिवेशवाद, इन पांच कारकों को उत्तरदायी ठहराया है । हिन्दूवाद के आदर्शों के अनुसार पुरुषों को स्त्रियों से श्रेष्ठ माना जाता है। स्त्रियों व पुरुषों को भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ निभानी चाहिए। स्त्रियों से माता व गृहणी की भूमिकाओं और पुरुषों से राजनीतिक व आर्थिक भूमिकाओं की आशा की जाती है । इसी युग में महिलाओं के साथ सबसे अधिक अत्याचार हुए। मुस्लिम शासकों की विलासितापूर्ण प्रवृति ने जहां एक ओर महिलाओं को भोग विलास की वस्तु में बदल दिया वही दूसरी ओर बाल विवाह, पर्दा प्रथा, महिलाओं की अशिक्षा आदि विभिन्न समाजिक कुरीतियों ने महिलाओं की स्थिति को बद से बदतर कर दिया। पर्दा प्रथा ने महिलाओं को घर की चार दीवारी में रहने को मजबूर कर दिया। महिलाओं के लिए शिक्षा के सारे द्वार बंद कर दिए गए। इसके अतिरिक्त सती प्रथा और जौहर जैसी अमानवीय कुरीतियों ने महिलाओं के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया। पति परमेश्वर, पतिव्रत धर्म जैसे धार्मिक पाखंडों का कड़ाई से पालन इस काल में किया गया। इस काल में महिलाओं को अबला माना जाता था, जिसका जिक्र कवि मैथलीशरण भी अपनी रचना में करते हैं –

"अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी, आँचल में है दूध और

आँख में पानी " मध्यकाल में स्त्रियों के सम्मान, विकास, और सशक्तिकरण में कमी आई तो इसका एक कारण मध्यकालीन साहित्यकारों द्वारा महिलाओं को हासिए पर रखना है और जहां कहीं महिलाओं की चर्चा हुई वहां उन्हें या तो ताड़न की अधिकारी कहा गया या फिर उसकी परछाई से दूर रहने का संदेश दिया गया । मध्यकालीन काव्य में मीरा को छोड़कर बाकी सभी कवियों ने महिलाओं पर पुरुष वर्चस्व वादी विचारों को थोपा। नारी के हक की लड़ाई की आवाज सर्वप्रथम मीरा के काव्य में दिखती है। विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका की चर्चा करने वाले साहित्य के स्रोत बहुत ही कम है। सन 1730 के आसपास तंजावुर के त्र्यंबकायज्वन का स्त्री धर्म पद्धति इसका एक अपवाद है । इस पुस्तक में प्राचीन काल के अपस्तंभ सूत्र के काल के नारी सुलभ आचरण संबंधी नियमों को संकलित किया गया है। इसका मुखड़ा छंद इस प्रकार है:

मुख्यो धर्मः स्मृतिषु विहितो भार्तृशुश्रुषानम हि :

यथा

स्त्री का मुख्य कर्तव्य उसके पति की सेवा से जुड़ा हुआ है।

जहाँ सुश्रूषा शब्द अर्थात "सुनने की चाह" में ईश्वर के प्रति भक्त की प्रार्थना से लेकर एक दास की निष्ठापूर्ण सेवा तक कई तरह के अर्थ समाहित है।

कुल मिला कर देखे तो वैदिक काल से मध्यकाल तक महिलाओं की स्थिति में कई प्रकार के उतार चढ़ाव आए। कभी महिलाओं को देवी कहकर पूजा गया तो कभी उसे अबला,रमणी कह कर भोगविलास की वस्तु समझा गया तो कभी उसे सहधर्मिणी अर्द्धांगिनी आदि नामों से पुकारा गया तो कभी पुरुष वादी सोच ने उसे उसके अधिकारों से ही वंचित रखा। नारी मनुष्य वर्ग का अभिन्न अंग है । उसकी स्थिति का समाज पर और समाज का उसकी स्थिति पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। समाज निर्माण में मात्र पुरुष ही भाग ले और नारी को घर के पिंजरे में ही कैद रखा जाए, यह अनुचित है । इसमें नारी वर्ग को और समाज को तो हानि है ही, प्रतिबन्ध लगाने वाले पुरुष भी उस हानि से नहीं बच सकते।

यदि इतिहास को साक्ष्य माना जाए तो मध्यकाल के बाद महिलाओं के पुनरोत्थान का काल ब्रिटिश काल से शुरू होता है।

ब्रिटिश शासन के 200 वर्षों के इतिहास में सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर कई परिवर्तन हुए। ब्रिटिश काल में ही स्त्री शिक्षा, स्त्री और पुरुष में समानता, सती प्रथा, एवं बाल विवाह पर रोक आदि कई सामाजिक परिवर्तन के अलावा औद्योगीकरण जैसे आर्थिक बदलाव से महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार हुए।

उन्नीसवीं सदीं के पूर्वार्द्ध में भारत के कुछ समाज सेवियों के द्वारा स्थापित आर्य समाज, ब्रह्म समाज एवं प्रार्थना समाज ने स्त्रियों की सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक स्थितियों को सबसे अधिक प्रभावित किया। राजाराम मोहन राय ने उस समय की सबसे बड़ी सामाजिक बुराई सती प्रथा के विरोध में आवाज उठाई। राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशव चन्द्र सेन आदि समाज सुधारकों ने बाल विवाह पर रोक, स्त्री शिक्षा की अनिवार्यता, दहेज प्रथा, विधवा पुनर्विवाह से संबंधित कई सामाजिक आंदोलन चलाए। परिणाम स्वरूप सती प्रथा निषेध अधिनियम 1829, 1856 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, 1891 में एज ऑफ कन्सटेन्ट बिल , 1872 बाल विवाह रोकने के लिये नेटिव मैरिज एक्ट पास हुआ। इन सभी के अलावा समाज में कई तरह की महिला संगठन का भी प्रादुर्भाव हुआ। इन सभी सामाजिक आंदोलनों एवं कानूनी बदलाव ने महिलाओं की स्थिति को सुधारने में अग्रणी भूमिका निभाई।

आजादी के बाद महिलाओं की स्थिति में ठोस सुधार हुए। आज

महिलाओं को पुरुषों के बराबर का हक मिलता है। आज महिलाएं वो सभी कार्य कर सकती है जिनसे उन्हें पहले वंचित रखा गया था। भारतीय संविधान भारत की महत्वपूर्ण राष्ट्रीय धरोहर है। 26 जनवरी 1950 का दिन भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया। भारतीय संविधान के अंतर्गत महिलाओं को कई अधिकार दिए गए जिनमें अनुच्छेद 15 समता का अधिकार, स्त्रियों के लिए विशेष अधिकार, अनुच्छेद 16 लोक सेवाओं में अवसर की समानता का अधिकार, अनुच्छेद 23 स्त्रियों के प्रति मानव दुर्व्यवहार, बेगार, बलात् श्रम आदि का प्रतिषेध, अनुच्छेद 39 में स्त्रियों के समान कार्य के लिए पुरुषों के बराबर वेतन, स्त्रियों की शोषण से रक्षा, अनुच्छेद 42 स्त्री से कठोर परिश्रम वाला काम न लेना, खतरनाक मशीनों पर काम न करवाना आदि एवं अनुच्छेद 15 ऐसी प्रथाओं पर रोक लगाती है जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है। अनुच्छेद 243 में महिलाओं के लिए पंचायतों के अंतर्गत कतिपय स्थान आरक्षित किए गएं। इन सभी के अलावा महिलाओं की रक्षा के लिए कई तरह के कानून बनाए गए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से सरकार द्वारा महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार लाने तथा उन्हें विकास की मुख्य धारा में समाहित करने हेतु अनेक कल्याणकारी योजनाओं और विकासात्मक कार्यक्रमों का संचालन किया गया है। 9 मार्च 2010 को राज्यसभा ने महिला आरक्षण बिल को पारित कर दिया जिसमें संसद और राज्य की विधान सभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था है। आज महिलाएँ आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी बनी हैं उन्होंने हर क्षेत्र में पुरुषों से अधिक बढ़ चढ़ कर न केवल भाग ली बल्कि हर क्षेत्र में अपनी श्रेष्ठता सिद्ध भी की है। आज महिलाएं राजनीतिक, खेल, शिक्षा, चिकित्सा, अन्तरिक्ष, प्रशासन, विज्ञान, अनुसंधान, साहित्य आदि हर क्षेत्र में अपनी अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। इंदिरागांधी, प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, शीला दीक्षित, मीरा कुमार, पीटी उषा, आशा भोंसले, सानिया मिर्जा, मेरी कॉम, साइना नेहवाल, सावित्रीबाई फुले, कल्पना चावला, किरण बेदी, अरुंधति रॉय, चंदा कोचर आदि इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। आज महिलाएं घर हो या बाहर हर जगह पुरुषों के समान ही अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रही हैं। महिलाएं आज कला, राजनीति एवं नौकरियों में अपनी पहुँच बना कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो रही है। महिलाओं द्वारा नौकरी करने से परिवार की आय में वृद्धि के फलस्वरूप लोगों की पुरुषवादी सोच में भी बदलाव देखने को मिल रहा है। कुछ समय से पहले जहां चिकित्सा एवं सेना जैसे क्षेत्रों में महिलाओं के होने की कल्पना नहीं की जा सकती थी वहीं लड़कियां आज डाक्टरी की परीक्षाओं में अव्वल आती हैं। आज महिलाएं जल, थल, वायु सभी सेनाओं में भाग लेकर देश की रक्षा कर रही हैं। अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिये संघर्ष करती हुई स्त्रियों ने लम्बा रास्ता तय कर लिया है, परन्तु आज भी समाज में महिलाओं का एक तबका सदियों से सामाजिक अन्याय का शिकार हो रहा है। आज भी समाज में महिलाएं दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या, लिंग भेद, बलात्कार, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, यौन उत्पीड़न, तीन तलाक जैसी कई बुराइयों का शिकार हो रही हैं। महिलाओं के प्रति होने वाले अत्याचार के आधार पर महिलाओं के लिए सबसे खतरनाक देशों की सूची में भारत आज चौथे नंबर पर है। हालांकि महिलाओं के खिलाफ हो रहे इन अपराधों के खिलाफ भारत सरकार ने बड़ी संख्या में कानून बनाए जिनका अगर सही से पालन होता तो भारत में स्त्रियों के साथ अत्याचार बहुत पहले खत्म हो जाता परंतु पुरुष वादी मानसिकता के कारण ऐसा हो नहीं पा रहा है। आज हर दिन महिलाओं से संबंधित घरेलू हिंसा, यौन उत्पीड़न आदि कई खबरे सुनने में आती है। निर्भया, जसिका, जैसी कई लड़कियां / महिलाएं हिंसा का शिकार हो रही हैं। भारत में यौन उत्पीड़न के कई ऐसे मामले हैं जो प्रशासन की लापरवाही, एवं कमजोर कानून व्यवस्था या भ्रष्टाचार के कारण दर्ज ही नहीं होते हैं।

महिला सशक्तिकरण के बिना देश व समाज में नारी को असली आजादी हासिल नहीं हो सकती । वह सदियों पुरानी मूढ़ताओं और दुष्टताओं से लोहा नहीं ले सकती । बन्धनों से मुक्त होकर अपने निर्णय खुद नहीं ले सकती । स्त्री सशक्तिकरण के अभाव में वह इस योग्य नहीं बन सकती कि स्वयं अपनी निजी स्वतंत्रता और अपने फैसलों पर अधिकार पा सके।

बेहतर समाज के निर्माण में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता को महसूस करते हुए विश्व पटल पर नारी शक्ति को जागृत करने के लिए हर वर्ष दुनिया भर में 8 मार्च का दिन अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है । नारी

जागरण को समर्पित इस दिवस पर एक थीम तय की जाती है। यह थीम हर साल अलग – अलग रखी जाती है।

इक्कीसवीं सदी नारी जीवन में सुखद सम्भावनाओं की सदी है। इसके उदीयमान स्वर्णिम, प्रभात की झाँकियाँ अभी से देखने को मिल रही है। युगदृष्टा स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार - "नारी जब अपने ऊपर थोपी हुई बेड़ियों एवं कड़ियों को तोड़ने लगेगी तो विश्व की कोई शक्ति उसे रोक नहीं पायेगी"। वर्तमान में नारी ने रुढ़िवादी बेड़ियों को तोड़ना शुरू कर दिया है। यह एक सुखद संकेत है। लोगों की सोच बदल रही है, फिर भी इस दिशा में और भी प्रयास अपेक्षित है। सरकार ने भारतीय राष्ट्रीय कानून के तहत 2001 में राष्ट्रीय महिला नीति बनाई जिसका उद्देश्य महिलाओं को आर्थिक, शैक्षणिक, एवं सामाजिक रूप से सशक्त एवं आत्म निर्भर बनाना एवं समस्त समाज को समाज में महिलाओं की स्थिति एवं भूमिका के संबंध में जागरूक करने पर बल देना है। वर्ष 2011 में भारत में महिला सशक्तिकरण के रूप में मनाया गया।

वर्ष 2018 में महिला दिवस का थीम "प्रेस फॉर प्रोग्रैस" रखा गया है जिसका मुख्य उद्देश्य है महिलाओं को उनके अधिकारों के लिए प्रोत्साहित करना। इससे पहले जरूरत यह है कि हम महिलाओं के प्रति अपनी मानसिकता को बदलें। जब तक हम अपने मन में स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव नहीं लाते तब तक महिलाओं को इसी तरह अपनी अस्मिता की रक्षा करने के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। युगनायक एवं राष्ट्र निर्माता स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जो जातियाँ नारियों का सम्मान करना नहीं जानती, वह न तो अतीत में उन्नति कर सकी, न आगे उन्नति कर सकेंगी। नारियां देश एवं समाज का अभिन्न अंग है। आज के समय में महिलाओं के सहयोग के बिना किसी देश का विकास नहीं हो सकता। अतः जरूरत है कि महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार द्वारा चलायी जा रही नीतियों में पूर्ण रूप से अपना सहयोग देकर इसे सफल बनाएं।

श्याम कुमार दास
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
इंडियन बैंक
कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

मन में एक दीप जलाना तुम....

जब हाथ को हाथ ना सूझता हो
जब राह को राह न दिखती हो
जब आंखें बंद खुली होने से
फर्क न कोई पढ़ता हो
तब बिल्कुल ना घबराना तुम
आंधियारा दूर भगाना तुम
मन में एक दीप जलाना तुम.....

जब लगता है मैं हार गया
आंखों पर छा अंधकार गया
जब हिम्मत साथ छोड़ जाती है
जब लगता मौत ही साथी है
तब फिर से कदम बढ़ाना तुम
अंधियारा दूर भगाना तुम
मन में एक दीप जलाना तुम....

वक्त जब उल्टा चलता है
अपने ही साथ नहीं देते
चाल जब उल्टी पड़ती है
नजरों से गिरा है तब देते
तब आंख से आंख मिलाना तुम
अंधियारा दूर भगाना तुम
मन में एक दीप जलाना तुम.....

झूठ कितना भी बलशाली हो
सच से सदैव ही हारा है
अंधियारा कितना हो गहरा
दीपो ने किया उजियारा है
हिम्मत को गले लगाना तुम
अंधियारा दूर भगाना तुम
मन में एक दीप जलाना तुम....

इक बात सदा मन में रखना
कर्तव्य पथ पर निरन्तर है बढ़ना
कठिनाई मिलेंगी राहों में
राहों में कांटे आएंगे
हंसना और मुस्कुराना तुम
अंधियारा दूर भगाना तुम
मन में एक दीप जलाना तुम.....

राजेश सिंह
मुख्य प्रबंधक, इलाहाबाद बैंक

अरुण यह मधुमय देश हमारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा ।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को, मिलता एक सहारा ॥
सरस तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर ।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा ॥

लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे ।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा ॥
बरसाती आंखों के बादल, बनते जहां भरे करुणा जल ।
लहरें टकराती अनंत की, पाकर जहां किनारा ॥

हेम कुंभ ले उषा सवेरे, भरती ढुलकाती सुख मेरे ।
मदिर ऊंघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा ।।

जयशंकर प्रसाद

गांधी जी के सपनों का स्वच्छ भारत

1. महात्मा गांधी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है।
2. यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है।
3. बेहतर साफ-सफाई से ही भारत के गांवों को आदर्श बनाया जा सकता है।
4. शौचालय को अपने ड्रॉइंग रूम की तरह साफ रखना जरूरी है।
5. नदियों को साफ रखकर हम अपनी सभ्यता को जिन्दा रख सकते हैं।
6. अपने अंदर की स्वच्छता पहली चीज है जिसे पढ़ाया जाना चाहिए। बाकी बातें इसके बाद होनी चाहिए।
7. हर किसी एक को अपना कूड़ा खुद साफ करना चाहिए।
8. मैं किसी को गंदे पैर के साथ अपने मन से नहीं गुजरने दूंगा।
9. अपनी गलती को स्वीकारना झाड़ू लगाने के समान है जो सतह को चमकदार और साफ कर देता है।
10. स्वच्छता को अपने आचरण में इस तरह अपना लो कि वह आपकी आदत बन जाए।

मुद्रण दिनांक : 18.10.2019